डॉ॰ रमाकान्त शुक्लः

ভাতি মে ভাৰতম্

ভাতি মে ভারতম্

ભાતિ મે ભારતમ્

ਭਾਤਿ ਮੇ ਭਾਰਤਮ

ಭಾತಿ ಮೆ ಭಾರತಂ

ഭാതി മെ ഭാരതം

॥ भाति मे भारतम् ॥

ଭାତି ମେ ଭାରତମ୍

ڀاتي مي ڀارتم

பாதி மே பாரதம்

భాతి మే భారతం

بھاتی مے بھارتم

BHĀTI ME BHĀRATAM



देववाणी-परिषद्, दिल्ली

आर ६ वाणी-विहारः, नयी दिल्ली - ११००५९

॥ भाति मे भारतम् ॥

(देवी अहिल्या विश्वविद्यालयस्य एम.ए. (संस्कृत) कक्षायां
श्री जगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य शास्त्रिकक्षायां
रुहेलखण्डविश्वविद्यालय-कुमायूँविश्वविद्यालययोश्च
बी.ए. कक्षायां पाठ्यत्वेन निर्धारितम्)

प्रणेता

डा० रमाकान्त शुक्लः

R.D.S. Shastri
K.V. misan sahib JAMMU

१९९०



प्रकाशिका

देववाणी-परिषद्, दिल्ली

६, वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५६

(भारतम्)

भाति मे भारतम् (संस्कृतकाव्यम्)

लेखकः : डा० रमाकान्त शुक्लः

प्रकाशकः : देववाणी-परिषद्, दिल्ली
६, वाणी-विहारः, नई दिल्ली-११००५९

मुद्रकः : प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस
३५, टी एक्स्टेंशन उत्तम नगर,
नई दिल्ली-११००५९

संस्करणम् : तृतीयम् १९९० छात्रसंस्करणम्

मूल्यम् : अष्टादश रूप्यकाणि रू०१८.००



BHĀTI ME BHĀRATAM (Sanskrit Poetry)

Author : Shukla, Dr. Rama Kant

Publisher : Devavani Parishad, Delhi
6, Vani Vihar, New Delhi-110059

Printer : Parveen Printing Service
35, T Extn., Uttam Nagar
New Delhi-110059

Edition : Third 1990 Student Edition

Price : Rupees Eighteen Only 18.00

तृतीय संस्करण की प्रस्तावना

'भाति मे भारतम्' का द्वितीय संस्करण १९८९ में मुद्रित हुआ था। इस बीच कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल की बी० ए० कक्षा में भी इसे पाठ्य पुस्तक के रूप में निर्धारित कर दिया गया हैं। श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी की शास्त्री कक्षा में भी इसके कुछ पद पाठ्यत्वेन निर्धारित हैं। विगत कुछ वर्षों से मध्य प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा मंडल की बारहवीं कक्षा में भी इसके कुछ पद्य पढ़ाये जा रहे हैं जो 'संस्कृत-चन्द्रिका' में संकलित हैं। इस प्रकार यह रचना इण्टर, बी० ए०, शास्त्री तथा एम० ए० तक के अनेक छात्रों तक पहुँचती हैं। जिन महानुभावों ने इसे यह अवसर प्रदान किया है; उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

इस बीच, दिल्ली दूरदर्शन के प्रात:कालीन राष्ट्रीय प्रसारण में "भाति मे भारतम्" धारावाहिक रूप में प्रसारित हुआ। इसके पाँच-पाँच मिनट के दस भाग क्रमश: दि० २०-१-१९९०, २७-१-१९९०, ३-२-१९९०, १०-२-१९९०, १०-३-१९९०, १७-३-१९९०, २४-३-१९९०, ३१-३-१९९०, १४-४-१९९० तथा २१-४-१९९० ई० को प्रात: ८-३६ पर प्रसारित किये गये। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम निष्पादिका संस्था 'देववाणी-परिषद्, दिल्ली' ने राष्ट्रीय प्रसारण से पूर्व, समानान्तर तथा अनन्तर अवलोकन-गोष्टियों में इसके प्रदर्शन आयोजित किये। मैनपुरी, दिल्ली, मेरठ, उज्जैन तथा होशियारपुर आदि स्थानों पर आयोजित आवलोकन-गोष्टियों में इसे ऐसे अनेक दर्शकों ने देखा जो किसी कारण इसका दूरदर्शन-प्रसारण नहीं देख पाये थे।

इन दस भागों में ५६ पद्य समाविष्ट हुए है। पद्यों का संकलन आनुपूर्वी से नही अपितु विषय वस्तु की दृष्टि से किया गया है। दूरदर्शन-क्रम से इनका प्रकाशन 'देववाणी-परिषद्, दिल्ली' से प्रकाशित त्रैमासिक पत्र 'अर्वाचीन-संस्कृतम्' के द्वादशवर्षीय प्रथम अंक (१५ जनवरी १९९०) में कर दिया गया है।

विद्वज्जनों साहित्यिकों, समीक्षकों तथा शिक्षाविदों को यह कार्यक्रम पूर्वावलोकन-गोष्ठियों में इस लिए दिखाया गया जिससे उनके परामर्श लिए जा सकें। ऐसे दर्शकों में देववाणी-परिषद् के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो० श्री निवास रथ, वर्तमान अध्यक्ष डा० राजेन्द्र मिश्र, कुलपति डा० मण्डन मिश्र, पूर्व कुलपति डा० आद्याप्रसाद मिश्र, पं० करुणापति त्रिपाठी, डा० सत्यव्रत शास्त्री, डा० जयमन्त मिश्र, कविवर पं० ओगेटि परीक्षित शर्मा, श्री त्रिलोकीनाथ धर, सम्पादकप्रवर डा० भास्कराचार्य त्रिपाठी, प्रो० शिव के० कुमार तथा डा० रमेशचन्द्र रस्तोगी आदि अनेक सहृदय-समीक्षक आते हैं। दूरदर्शन-प्रसारण को देखकर पूर्वकुलपति डा० रामकरण शर्मा, मूर्धन्य समालोचक डा० नगेन्द्र, प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो० देवीदत्त शर्मा, डा० मारुतिनन्दन पाठक, श्री हरिमाधवशरण, श्री श्री० भि० वेलणकर, प्रा० हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, डा० प्रकाश पाण्डे, डा० पुष्पा दीक्षित, डा० दीपक घोष, श्री दीनदयाल चतुर्वेदी, डा० विश्वम्भर मिश्र 'वागीश', श्री विश्वनाथ शास्त्री, श्री मुकुल शर्मा, डा० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, श्री राधेश्याम शर्मा, श्री अनन्तराम गौड़, स्निग्धा, अजदक, श्री आर०के० नरूला, श्री चन्द्रभान शर्मा, डा० रवीन्द्र नागर तथा श्री ललनकृष्ण पण्ड्या आदि अनेक आप्त जनों ने अपने विचार दूरदर्शन अधिकारियों तथा मेरे पास भेजे। इनमें से कुछ विचारों को कु० वन्दना मिश्र ने संकलित किया है जिनका प्रकाशन 'अर्वाचीनसंस्कृतम्' के द्वादशवर्षीय द्वितीय अंक (१५ अप्रेल १९९० ई०) में हुआ है। चाहें तो छात्र इन विचारों को देख लें।

भारत के कोने कोने से अनेक पत्र दूरदर्शन के "आप और हम" कार्यक्रम के लिए भी आये जिनमें कुछ का उत्तर श्री शरद दत्त ने दिया। प्रो० शिव के० कुमार ने 'दि हिन्दुस्तान टाइम्स' के १० जून १९९० के रविवारीय परिशिष्ट के चतुर्थ पृष्ठ पर विचार व्यक्त करते हुए "भाति मे भारतम्" रचना को 'an impassioned portrayal of the glory that is (not was) India' कहा। अन्य अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी इस पर विद्वज्जनों, सहृदयों एवं समीक्षकों के विचार प्रकाशित हुए। मैं इन सभी के प्यार-दुलार को अपना अक्षय्य धन समझता हूँ तथा इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

इसके अतिरिक्त वर्तमान पीढ़ी के उन सभी प्रौढ़ एवं उदीयमान संस्कृत कवियों के प्रति भी हार्दिक विनम्रता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अनेक कविसम्मेलनों और काव्य-गोष्ठियों में इस रचना के पद्यों को सुनकर अपने आशीर्वाद और

शुभकामनाएँ मुझे प्रदान की हैं। इनमें अनेक का नामोल्लोख मैं प्रथम तथा द्वितीय संस्करण की प्रस्तावनाओं में एवं इस संस्करण की प्रस्तावना के पूर्व प्रघट्टकों में कर चुका हूँ। अपनी लेखनी को कृतार्थ करने के लिए मैं यहाँ कवि वरेण्य श्री श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो० परमानन्द शास्त्री, श्री प्रभुदत्त स्वामी प्रो० प्रभाकर नारायण कवठेकर, डा० पी० के० नारायण पिल्लै, श्री जानकीवल्लभ शास्त्री, डा० शिवप्रसाद भारद्वाज, डा० हरिराम आचार्य, डा० शंभुनाथ आचार्य, डा० केदारनारायण जोशी, डा० विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र 'विनय' डा० केशवचन्द्र दाश, डा० हर्षदेव माधव डा० इच्छाराम द्विवेदी, डा० मदनलाल वर्मा, डा० देवदत्त भट्टी, डा० वेदकुमारी घई, डा० सत्यपाल नारंग, डा० कृष्णलाल नादान, कविरत्न अमीरचन्द्र शास्त्री, कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल, डा० रुद्रदेव त्रिपाठी, डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री, डा० घनश्याम तिवारी, डा० राजदेव मिश्र, डा० रमाशंकर तिवारी, डा० राधा वल्लभ त्रिपाठी, डा० बच्चूलाल अवस्थी, श्री प्रेमवल्लभ द्विवेदी, डा० लीना रस्तोगी, सौ० कमल अभ्यंकर, डा० नलिनी शुक्ला, पं० वसन्त अनन्त गाडगील, डा० बदरीनारायण कल्ला, पं० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते, (स्व०) पं० आनन्द झा, पं० वासुदेव द्विवेदी, डा० हरिहर त्रिवेदी, डा० सुधीकान्त भारद्वाज, पं० कलानाथ शास्त्री, डा० पद्म शास्त्री, डा० जगन्नाथ पाठक, डा० सुधाकराचार्य त्रिपाठी, डा० विश्वनारायण शास्त्री, डा० शंकरदेव 'अवतरे', श्री जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि', डा० हरिदत्त शर्मा, डा० कमलेशदत्त त्रिपाठी, डा० लड्कुेश्वर शास्त्री शतपथी, डा० बी० आर० शास्त्री, डा० मथुरादत्त पाण्डेय, डा० कृष्णमुरारि शर्मा, पं० इन्द्रदत्त उनियाल, डा० मिथिलेश कुमारी मिश्र, श्री मधुर शास्त्री, डा० चन्दनलाल पाराशर, डा० मनोरमा तिवारी, डा० सी. आर. स्वामिनाथन्, डा० रामेश्वर दत्त शर्मा, डा० कामताप्रसाद, त्रिपाठी, डा० रमा चौधुरी, श्री सोमदत्त वाजपेयी पं० वेदानन्द झा, पं० टी. वी. परमेश्वर अय्यर, श्री श्रीसुन्दरराजन्, श्री ओट्टूर उण्णि नम्बूदिरीपाद, श्री भरत पिषारडि, डा० वनेश्वर पाठक, पं० रतिनाथ झा, डा० बलभद्र प्रसाद गोस्वामी, प्रो० वी० वेंकटाचलम्, डा० दयानन्द भार्गव, डा० रामकिशोर मिश्र, डा० रहसबिहारी द्विवेदी डा० बहादुरचन्द्र छाबड़ा, डा० बिशनलाल गौड़, पं० विष्णुदत्त शर्मा, डा० सेवाराम शर्मा, डा० नित्यानन्द शर्मा, श्री लछमन सिंह अग्रवाल, कविपुण्डरीक पं० सम्पूर्णदत्त शास्त्री डा० वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी (स्व०) पं० रघुनाथप्रसाद चतुर्वेदी, डा० उमारमण झा तथा यहाँ अनुलिखित उन सभी वर्तमान संस्कृत कवियों के प्रति प्रणति समर्पित करता हूँ जो इस रचना की पाठ-प्रस्तुति के साक्षी रहे हैं। ये सभी कवि संस्कृत की ऊर्जा, मधुरिमा और प्रसाद की धारा को जीवन्त बनाये

हुए अपने सारस्वत व्रत का पालन कर रहे हैं। देश और विश्व की गौरव देववाणी संस्कृत की प्रगति और समृद्धि के साधक जो थे, जो हैं और जो होंगे—उन सभी को प्रणाम !

"अमृतेति गदिता अमरत्वभावभरिता ।
नित्यं प्रवर्धमाना सुरभारती विजयते ॥"

इसके अतिरिक्त डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन', पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' डा० त्रिलोचन शास्त्री, बाबा, नागार्जुन, दुर्गावती सिंह, डा० रामदरश मिश्र, डा० नित्यानन्द तिवारी, डा० सुन्दरलाल कथूरिया, आदि वर्तमानयुगीन सहृदय हिन्दी कवियों ने भी इसे सुनकर हर्ष व्यक्त किया। प्रसिद्ध सितारवादक श्री महमूद मिर्जा ने दूरदर्शन के श्री शरद दत्त को लन्दन से लिखा कि वे 'भाति मे भारतम्' के तरन्नुम को अक्सर गुनगुनाते रहते हैं। साहित्यकारों और कलाकारों का इतना स्नेह जिसे मिल जाये उसे अपने ऊपर गर्व होना स्वाभाविक है।

मुद्रण में कुछ भूल रह गई हैं। यथा पद्य ६२ में "वैदेशिकैः" के स्थान पर "वैदेशिककैः" पद्य ६६ में "यद्भजामि" के स्थान पर "यद्भभजामि" आदि। कृपालु प्राध्यापकों से निवेदन है कि वे छात्रों को ऐसी त्रुटियों का परिमार्जन कराने की कृपा करें। इसके अतिवित्त कोई सुझाव हो तो उससे मुझे परिचित कराने की कृपा करें ताकि आगामी संस्करण में उसका उपयोग किया जा सके। अभ्रंलिह महर्घता के कारण प्रस्तुत संस्करण के मूल्य में थोड़ी सी वृद्धि करनी पड़ी है। आशा है, पाठक सहन कर लेंगे।

इस अवसर पर मैं अपने पूज्य माता (श्रीमती प्रियम्वदा शुक्ला), पिता (स्व० आचार्य श्री ब्रह्मानन्द जी शुक्ल) तथा गुरुजनों का सश्रद्ध स्मरण करता हूँ जिसके आशीर्वाद ने मुझे संस्कृत की कुछ पंक्तियाँ रचने योग्य बनाया। परमेश्वर से यह भी प्रार्थना करता हूँ कि हमारे भारत के विशाल वंशवृक्ष में जो भी नयी कोंपलें फूटें वे संकृत की सुधाधारा से अनुप्राणित रहें।

विद्वच्चरणरेणुचर्चितोत्तमाग

(रमाकान्त शुक्ल)

देववाणी-परिषद्, दिल्ली का
पन्द्रहवाँ संकल्पना-दिवस
२१.८.१९९० ई०
आर ६ वाणी-विहारः, नयी दिल्ली ११००५६

द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना

'भाति मे भारतम्' पुस्तक का प्रथम संस्करण १९८० ई. में देववाणी – परिषद्, दिल्ली से प्रकाशित हुआ था । उसके 'प्रास्ताविकम्' में इस कृति की रचना और प्रकाशन की संक्षिप्त चर्चा कर दी गयी थी। उसका कुछ अंश यथावत् इस संस्करण में दे दिया गया है । आशा है, सुधी पाठक उसे देख लेंगे ।

ग्रन्थ प्रकाशित होने पर कई आदरणीय विद्वानों ने इसके विषय में लेख या टिप्पणी रूप में अपने विचार व्यक्त किये । मौखिक रूप से भी अनेक विद्वज्जनों ने इस पर गोष्ठियों में विचार व्यक्त किये । १९८१ में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत–विभाग के तत्कालीन आचार्य और अध्यक्ष प्रो. सत्यव्रत शास्त्री, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत रीडर डा. शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के संस्कृत–विभाग के आचार्याध्यक्ष डा. धर्मेन्द्रनाथ गुप्त, कुमायूँ वि.वि. के संस्कृत–विभागाध्यक्ष डा. हरि नारायण दीक्षित, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के अनुसन्धान संस्थान निदेशक डा. भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश' शास्त्री आदि विद्वानों ने इस पर लेख लिखे जो 'अर्वाचीनसंस्कृतम्' त्रैमासिक पत्र तथा अन्यान्य ग्रन्थों में प्रकाशित हुए । डा. संध्या शर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में पीएच. डी. प्राप्त अपने शोध प्रबन्ध में इसकी सविस्तर चर्चा की । आचार्य डा. रमेश चन्द्र जी शुक्ल का लेख तो प्रथम संस्करण में छप ही चुका था । इनमें से कुछ लेख इस संस्करण में अविकल रूप में दिये जा रहे हैं । इनमें लेखकों के पद तत्कालीन ही मुद्रित हैं क्योंकि आफ्सेट मुद्रण में परिवर्तन शीघ्रता में संभव नहीं हुआ ।

कविरत्न ओमप्रकाश ठाकुर ने अपनी 'संस्कृतवाणी' कविता में संस्कृत के मुख से कहलाया – 'गायन् मधुरं भाति में भारतं कविशार्दूलरमाकान्तः ।' (द्र. अर्वाचीनसंस्कृतम् ९/१ जनवरी १९८७) अभी कुछ दिन पूर्व म. प्र. संस्कृत अकादेमी, भोपाल से प्रकाशित होने वाली 'दूर्वा' पत्रिका में प्रकाशित रचना 'सुरभारतीदण्डकम्' में 'अभिराज' डा. राजेन्द्र मिश्र ने समकालीन संस्कृत कवियों की चर्चा करते हुए लिखा – 'सिंहनादस्तदीयो रमाकान्तको भाति यस्याननेऽनारतं भारतम्' (द्र. 'दूर्वा' त्रयोदशांकः २० मई १९८९, पृ. ५५) । कानपुर से प्रकाशित 'पारिजातम्' पत्र के संपादक डा. प्रकाश मित्र शास्त्री जी ने तो होली पर टाइटिल देते हुए मेरे लिए 'देववाणी च यत्रास्ति मोदाकुला' पंक्ति ही दे दी । उत्कलवाचस्पति प्रो. गौरीकुमार ब्रह्मा 'कविकोकिल' ने अपना 'भारतगौरवम्' नामक काव्य मेरे काव्य पाठ से प्रसन्न होकर मुझे समर्पित कर दिया । इन सभी महानुभावों का मुझ पर बड़ा स्नेह है – मैं यही मानता हूँ । इन सभी के प्रति मैं सादर आभार व्यक्त करता हूँ ।

'भाति मे भारतम्' के प्रथम संस्करण के बाद कई स्थानों पर आयोजित समारोहों तथा गोष्ठियों में इसके अंशों का पाठ करने का मुझे अवसर मिला । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित पंचम विश्व संस्कृत सम्मेलन में, फिलाडेल्फिया (अमेरिका) में आयोजित षष्ठ विश्व संस्कृत सम्मेलन में, मारिशस में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन में, अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के जयपुर, अहमदाबाद, कलकत्ता तथा विशाखापत्तनम् आदि अधिवेशनों में, उज्जैन के कालिदास–समारोह में, देववाणी–परिषद्, दिल्ली के अ.भा. संस्कृत कविसम्मेलनों में, मध्य प्रदेश संस्कृत अकादेमी के भोपाल, अम्बिकापुर, जबलपुर आदि स्थानों पर आयोजित समारोहों में, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादेमी के लखनऊ, वृन्दावन तथा कानपुर में आयोजित समारोहों में, डा. हरिसिंह गौर वि.वि., सागर, इलाहाबाद वि.वि., अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि., नागपुर वि.वि., मेरठ वि.वि. संस्कृत प्राध्यापक परिषद्, आगरा वि.वि. संस्कृत प्राध्यापक परिषद्, दिल्ली वि.वि. के संस्कृत–विभाग, हिन्दी–विभाग तथा राजधानी, मोतीलाल नेहरु, लक्ष्मीबाई, इन्द्रप्रस्थ, दौलतराम, कालिंदी, मैत्रैयी और श्री गुरु तेग बहादुर खालसा आदि कालेजों में इसके पाठ आयोजित हुए । सुरभारती सेवा संस्थान, मैनपुरी, दिल्ली संस्कृत अकादेमी, बरेली कालेज, बरेली, साहित्य संगम दिल्ली, आस्वाद, मीमांसा, शंकर विद्या केन्द्र, दिल्ली, आदि के आयोजनों में भी इसे सुना गया । मथुरा, मुज़फ़्फ़रनगर, मद्रास, कानपुर, त्रिचूर, गुरुवायूर, ओंकारेश्वर, खंडवा, इटावा, शिकोहाबाद, आदि अनेक स्थानों औपचारिक एवं अनौपचारिक गोष्ठियों में इसके पाठ करने का मुझे अवसर मिला । इन पंक्तियों को लिखने से तीन दिन पूर्व अर्थात् १८ अगस्त, १९८९ को आगरा वि.वि. के के. एम. मुंशी, हिन्दी संस्थान में आयोजित आगरा वि.वि. के प्रथम संस्कृत दिवस समारोह में इसका पाठ हुआ । प्रभु की कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद से जहाँ भी यह कविता पढ़ी गयी, इसे श्रोताओं का दुलार मिला । डा. राजेन्द्र मिश्र की अध्यक्षता में इलाहाबाद वि.वि. के संस्कृत विभाग के छात्रों मे सम्मुख तथा शताब्दी समारोह के अवसर पर सीनेट हाल में पाँच–छः हज़ार श्रोताओं के सम्मुख इस कविता के पाठ के दृश्य को मैं भूले नहीं भूलता । श्रोताओं के स्नेह से बढ़कर कवि के लिए कोई पुरस्कार हो ही नहीं सकता ।

जब मैं कहीं इस कविता को पढ़ता तो एकाध नया श्लोक भी बन जाता था । उदाहरणार्थ १९८० के बाद की भारत की प्रगति के सूचक कुछ पद्य ये हैं :

एशियाडं सुभव्यं समायोजयद्, अन्तरिक्षे नरान् निर्भयान् प्रेषयत् ।
निर्गुटं राष्ट्रसम्मेलनं योजयद्, भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

मेलबोर्ने तथा शारजाहे पुरे भव्यभव्यं क्रिकेटे जयं प्राप्नुवत् ।
दक्षिणे च ध्रुवे स्वीयकीर्तिं लिखद् भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

देशभक्तान् प्रति स्वादरं व्यञ्जयद् भीषणं युद्धदावानलं शामयत् ।
कालकूटं पिबच्चापि मोदं वहद् भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

यस्य वाराणसी योजयन्ती शुभं पञ्चमं सांस्कृतं विश्वसम्मेलनम् ।
हर्षसम्फुल्लनेत्रातिथीन् सेवते भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

यच्च विश्रामभूमिर्मतं प्राणिनां यस्य चित्ते प्रभूतोऽवकाशः सदा ।
यन्न चागत्य गन्तुं न कोऽपीच्छुको भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

'जन्मसिद्धाधिकारः स्वराज्यं हि मे तं गृहीत्वैव तुष्टिं गमिष्याम्यहम्'।
बालगंगाधरो यत्र घोषं ददौ भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

'दत्त मह्यं स्वरक्तं नु भो बान्धवाः, आत्मतन्त्र्यं मया दास्यते तत्कृते।'
घोषमित्थं सुभाषस्य संश्रावयद् भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

देहली राजधानी यदीया प्रिया नूतना नूतना प्रत्यहं स्पन्दते ।
स्वांकमाप्तान् जनान् पालयन्ती सदा भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।।

यत्प्रकृत्याः सुलीलास्थलं राजते पक्षिणां यद्विहारस्थलं विद्यते ।
षड्ऋतूनाम् विलासैः समुल्लासितं भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

यत्र हत्याबलात्कारसम्पीडिताः दस्युतोत्कोचमाहार्घ्यसंशोषिताः ।
नो हताशा जनाः आयतिप्रेक्षकाः भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

इन पद्यों को द्वितीय संस्करण के मूल पाठ में मैं सम्मिलित नहीं कर रहा । यदि आगे चलकर विचार बदला तो देखा जाएगा । हाँ, कुछ छोटे–छोटे आवश्यक संशोधन मूल पाठ में मैंने कर दिये हैं । ११, १२, १६, 33 , ४१ तथा ७८ संख्यक पद्यों में मूल भाव की रक्षा करते हुए छोटे–छोटे से संशोधन किये गये हैं । १५ संख्यक पद्य का पूवार्ध 'रोहिणीं प्रक्षिपद् भास्करं साधयद् आत्मनीनैरमोघैर्मितैस्साधनैः' अग्रलिखित रूप में परिवर्तित कर दिया गया है:– 'अग्निमूर्जस्वलं स्वत्वरक्षाकृते साधनैरात्मनीनैः सुसंसाधयत् ।' इस परिवर्तन को मैंने १९८९ में अभी कुछ दिन पूर्व किया जबकि मैं दूरदर्शन के लिए 'भाति मे भारतं' नामक कार्यक्रम का आलेख संपादित कर रहा था । आशा है, समीक्षकों को यह पाठ स्वीकार्य होगा । इस कार्यक्रम में 'भाति मे भारतं' को अधिक संगीतात्मक बनाने के लिए इसकी टेक 'भाति मे भारतं भाति मे भारतं, भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्' के रूप में रखी गई है ।

'भाति मे भारतम्' के प्रथम संस्करण का समुन्मीलन ४ मार्च १९८२ ई. को 'देववाणी–परिषद् दिल्ली' के तत्त्वावधान में आयोजित एक समारोह में सुख्यात काव्यतत्त्वचिन्तक एवं महाकवि डा. रेवाप्रसाद द्विवेदी 'सनातन' ने किया था। डा. द्विवेदी ने इसे स्वभावोक्तिमय राष्ट्रीय काव्य कहा था। इस अवसर पर डा. मण्डन मिश्र, डा. रामचन्द्र द्विवेदी, डा. कृष्णकांत शुक्ल, डा. रामसुरेश पाण्डेय, (स्व.) डा. जगदीशदत्त दीक्षित आदि विद्वानों ने इस कृति की मौखिक समीक्षा भी की थी। 'भाति मे भारतम्' की रचनास्थली ६ वाणी–विहार में आयोजित इस

समारोह मे अनेक विद्वान् पधारे थे। ऐसे समारोहों ने वाणी–विहार को मेरे द्वारा दिया गया विशेषण **'पण्डितैर्मण्डितः'** (पद्य ९०) अन्वर्थ किया है। आज यद्यपि वाणी–विहार का इलाका वाहनों, ध्वनिविस्तारकों तथा अन्यान्य कारणों से कोलाहलमय रहता है तथापि स्थानीय और अभ्यागत विद्वानों से यह आज भी मण्डित होता ही रहता है। मैं इन सभी विद्वज्जनों के प्रति आदर व्यक्त करता हूँ।

विगत लगभग १० वर्षो में इस काव्य के अंशो का मैंनें शताधिक स्थानों पर पाठ किया होगा। राजस्थान संस्कृत अकादेमी, राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. तथा अन्यान्य संस्थओं के आयोजनों में प्रायः मँाग की जाती थी कि इस काव्य का ऑडियो केसेट तैयार किया जाय। हर्ष का विषय है कि यह केसेट तैयार हो चुकी है जिसमें श्री पंचानन सरदार के संगीत निर्देशन मे श्रीमती मृदुला गर्ग तथा उनके साथियों ने सहयोगी स्वर दिये हैं।

इस काव्य को देश के प्रायः सभी मूर्धन्य संस्कृत विद्वानों, प्रसिद्ध साहित्यकारों तथा लक्षाधिक श्रोताओं ने साक्षात् कविमुख से सुनकर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की है। काञ्चीकामकोटिपीठाधिपति जगद्गुरु शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी तथा श्री विजयेन्द्र सरस्वतीजी, स्वामी अखण्डानन्दजी महाराज ने इसे अपना आशीर्वाद दिया है। प्रो. रामचन्द्र नारायण दाण्डेकर एवं प्रो. रमारंजन मुखर्जी आदि ज्ञानगुरुओं ने इस के लिए मुझे अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। इन सभी के प्रति सश्रद्ध विनम्रता व्यक्त करता हूँ।

यह काव्य रुहेलखण्ड वि.वि. की बी.ए. तथा देवी अहिल्या वि. वि. की एम.ए. परीक्षा में पाठ्य ग्रन्थ के रूप में निर्धारित किया गया है, इसके लिए मैं वि.वि. अधिकारियों का आभारी हूँ । अपने अग्रजों–डा. कृष्णकांत शुक्ल तथा डा. उमाकांत शुक्ल एवं अनुज डा. विष्णुकांत शुक्ल का आभारी हूँ, जिन्होंने द्वितीय संस्करण को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अपने सत्परामर्श दिये ।

द्वितीय संस्करण छात्र संस्करण के रूप में प्रकाशित हो रहा है, अतः इसका मूल्य ४० रुपये से घटाकर १५ रुपये कर दिया गया है, यद्यपि पृष्ठों की संख्या में वृद्धि हुई है । आवरण पृष्ठ में भी कुछ कलात्मक परिवर्तन किया गया है । ग्रन्थ के त्वरित मुद्रण के लिए प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस के स्वामियों तथा पं. चन्द्रभान शर्मा ने जो भूमिका निभाई है एवं इस प्रस्तावना को कंप्यूटर कम्पोजिंग करने में श्री राम निवास और श्री देव मनोगरन ने जो श्रम किया है, तदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं । यद्यपि मुद्रण में सावधानी बरती गयी है, तथापि यदि कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तो विद्वानों से प्रार्थना है कि उनका संशोधन कर लें ।

'देववाणी–परिषद्, दिल्ली' का
चतुर्दश संकल्पना दिवस
२१ अगस्त, १९८९
६ वाणी–विहार, नयी दिल्ली–११० ०५९

विद्वज्जनचरणकमलचञ्चरीक

(रमाकान्त शुक्ल)

प्रथमसंस्करण—प्रास्ताविकांशः

भारतस्य स्वरूपमुद्घाटयित्रीणां मामकीनाना कवितानां शङ्खलायामेवास्ति—'भाति मे भारतम्' नाम्नीयं रचना। इयं हि रचना २४ दिसम्बर १९७८तः १५ अगस्त १९८० यावत् त्रिषु चरणेषु वृद्धिं प्राप्ता। २४ .१२.१९७८ तारिकायां स्वजन्मदिवसे मया अस्या एकपञ्चाशत् पद्यानि विरचितानि। सर्वप्रथमं १२–१३.२.१९७९ तारिकयोः दिल्लीस्थराजधानीकालेजे समायोजिते 'देववाणी–परिषद्, दिल्ली'—संस्थाया द्वितीयवार्षिकाधिवेशनेऽस्याः मया पाठः कृतः। सहृदयैस्तदेयमतीव लालिता। पुनश्च दिल्लीप्रशासनस्य साहित्यकलापरिषदा ३.४.१९७९ तारिकायां नयीदिल्लीस्थे विट्ठलभाईपटेलहाउसे कांस्टीट्यूशनक्लबे समायोजितेऽखिलभारतीयसंस्कृतकविसम्मेलनेऽपीयं पठिताऽभूत्। तत्रापि सहृदयानामशिषोऽस्यै प्राप्ताः। पुनश्च २१.३.१९८० तारिकायां देववाणी–परिषदा समायोजिते ऽखिलभारतीयसंस्कृतकविसम्मेलनेऽस्या रचनायाः कतिपयानां पद्यानां पाठोऽभूत्। अस्मिन्नवसरेऽस्याः कलेवरवृद्धिः सञ्जाता। अस्मिन्नवसरे पठितेष्वपि पद्येषु कवीनां सहृदयानाञ्च अनुक्रोशोऽभिव्यक्तोऽभूत्। अस्मिन्नवसरे प्रकाशितायां स्मारिकायां तत्र पठितानां पद्यानां प्रकाशनमसभूत्। आकाशवाणीदिल्लीतोऽप्यस्याः केचनांशाः प्रसारिता अभूवन्। पुनः देववाणी–परिषदा प्रकाशिते अर्वाचीनसंस्कृतनाम्नि त्रैमासिकपत्रे १५.४.१९८० तारिकायां ते प्रकाशिताः सञ्जाताः। २०.४.१९८० तारिकायां रुहेलखण्डविश्वविद्यालयीयबरेलीकालेजसंस्कृतविभागस्नातकोत्तरपरिषदो वार्षिकोत्सवेऽप्यस्या रचनायाः कानिचित्पद्यानि पठितान्यभूवन्।

श्रोतृभिरस्याः प्रकाशनं भृशमनुरुद्धम्। तेषु केचन इमा सानुवदामिच्छन्ति स्म। तेषां स्निग्धानुरोधं पूरयितुमस्या रचनायाः पुस्तकाकारः संकल्पितः १५.८.१९८० तारिकायां कानिचिदन्यान्यपि पद्यानि रचितानि। इत्थं त्रिषु चरणेष्वस्याः कलेवरवृद्धिः संवृत्ता। १५.१०.१९८० तारिकायां सांग्लहिन्द्यनुवादेयं रचना 'भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्' इति शीर्षकेण अर्वाचीनसंस्कृतस्य द्वितीयवर्षस्य चतुर्थेऽङ्के प्रकाशिता बभूव। इदानीं च स्वतन्त्रग्रन्थरूपेण 'भाति मे भारतम्' इतिशीर्षकेणेयं प्रकाश्यते। अत्र शीर्षकस्य लाघवेन साकं सङ्गीतात्मकतापि सुरक्षितास्ति। ....

रचनेयं किंरूपा कीदृशी चेत्यत्र समीक्षकाणामेव मतं प्रमाणं भवेत्। अस्यां रचनायां स्रग्विणी वृत्तं प्रयुक्तमस्ति। तल्लक्षणं यथा—'रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी सम्मता' इति। किन्तु क्वचिन्मात्रानुरोधेनापि पद्यरचना विहितास्ति। गायको विंशतिमात्रात्मकैश्चरणान् साधु गातुं शक्नोति। 'ओडिसी मणिपुरी.....' (33) इत्यादि पद्यं रगणचतुष्टयविवर्जितमपि स्रग्विणी—रूपेण गातुं शक्यते।..... आङ्ग्लभाषानुवादप्रसङ्गे व्यक्तिवाचकसंज्ञानां रोमनलिप्यां लेखने, प्रायः 'डाइक्रिटिकल'चिह्नानां (Diacritical Marks) प्रयोगो विहितः किन्तु क्वचिदतिप्रसिद्धरूपेषु एतच्चिह्नाभिनिवेशो नैव पालितः।....

गुरुवरैराचार्यडाक्टररमेशचन्द्रशुक्लमहाभागैरेतां कवितामालम्ब्यैको लेखोऽस्ति लिखितः। वन्दनीयचरणानां करुणामूर्तीनां तेषामुपकारभारं कथं व्यक्तीकरवाणि ? तेषामाशिषान्यदपि किञ्चित् सुरम्यं रचयेयमिति भगवन्तं प्रार्थये। देववाणी—परिषदः कृते कृतज्ञतामावहामि यया अस्या रचनायाः प्रकाशनमनुष्ठितम्।

कार्तिकी पूर्णिमा, वि. २०३७ — विनयावनतः

२२.११.१९८० ई. — रमाकान्त शुक्लः

देववाणी—विहारः, नयी दिल्ली—११० ०५९

समर्पणम्

भारतं वर्तते मे परं सम्बलं,
भारतं नित्यमेव स्मरामि प्रियम् ।
भारतेनास्ति मे जीवनं जीवनं,
भारतायार्पितं मेऽखिलं चेष्टितम् ॥
भारताद्भाति मे भूतलं भूतलं,
भारतस्य प्रतिष्ठास्ति मे मानसे ।
भारतेऽहं प्रपश्यामि विश्वेश्वरं,
भारत ! क्षोणिशृङ्गार ! तुभ्यं नमः ॥

भारत मेरा परम सहारा है; [illegible] भारत का मैं [illegible] ही स्मरण करता हूँ, भारत से ही मेरा जीवन जीवन है; मेरी समस्त चेष्टाएँ भारत के लिए समर्पित हैं; भारत से ही मुझे भूतल भूतल दिखाई देता है; भारत की प्रतिष्ठा मेरे मन में समायी है; मैं तो भारत में विश्वेश्वर भगवान् का दर्शन करता हूँ। धरती के सिंगार भारत ! तुझे नमस्कार है !

Bhārata is my ultimate resort, I always remember my dear Bhārata; my life is worth calling life by Bhārata; all my actions are dedicated to Bhārata. The world appears to world in true sense because of existence of Bhārata; the glory of Bhārata has occupied a permanent niche in the temple of my heart; in Bhārata I visualise the embodiment of God; I salute you O Bhārata, the ornament of the universe!

भाति मे भारतम्

(प्रणेता : रमाकान्तशुक्लः)

(१)

विश्वबन्धुत्वमुद्घोषयत्पावनं
विश्ववन्द्यैश्चरित्रैर्जगत्पावयत् ।
विश्वमेकं कुटुम्बं समालोकयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१)

पवित्र विश्वबन्धुत्व-भावना की उद्घोषणा करने वाला, (राम, कृष्ण, गौतम, गांधी आदि) विश्ववन्द्य चरित्रों से जगत् को पवित्र करने वाला और सम्पूर्ण विश्व को एक कुटुम्ब के रूप में देखने वाला मेरा भारत भूतल पर सदा प्रोद्भासित रहता है ।

(1)

Proclaiming the noble motto of world fraternity, sanctifying the world with all-venerable characters, and considering the Universe as one family, my Bhārata ever glows on the earth.

(२)

'क्रुद्धहिंसाबले क्वास्त्यहिंसाजयः ?
कुत्र मुच्येत बद्धश्च मामन्तरा ?'
प्रश्नमित्थं जगत्सम्मुखे स्थापयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।

(२)

'मेरे अतिरिक्त क्रुद्ध हिंसा के बल पर अहिंसा की जय और कहाँ हो सकती है एवं बद्ध जीव और कहाँ मुक्ति प्राप्त कर सकता है ?' इस प्रश्न को दुनिया के सामने रखता हुआ मेरा भारत भूमण्डल में सदा सुशोभित हो रहा है ।

(2)

'Where, in the world, except me, voilence is subdued by non-violence, and those suffering from bondage are liberated ?' - posing this question to the universe, my Bhārata ever glows on the earth.



(३)

मानवामानितं दानवाबाधितं
निर्जराराधितं सज्जनासाधितम् ।
पण्डितैः पूजितं पक्षिभिः कूजितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(३)

मनुष्यों के द्वारा अत्यन्त सम्मानित, दानवों के द्वारा अबाधित, देवताओं के द्वारा आराधित, सज्जनों के द्वारा आसाधित, पण्डितों के द्वारा पूजित तथा (अनेक) पक्षियों के कूजन में अभिव्यक्त मेरा भारत भूतल में अनवरत सुशोभित हो रहा है।

(3)

Honoured by the men, undisturbed by the demons, worshipped by the gods, desired by the noble persons, respected by the Paṇḍitas and warbled by the birds, my Bhārata ever glows on the earth.

(४)

मानवैर्दानवैस्सज्जनैर्दुर्जनै-
स्सद्धनैर्निर्धनैस्सद्बलैर्निर्बलैः ।
निर्जरैर्योगिभिर्भोगिभिश्चार्थितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(४)

मानव, दानव, सज्जन, दुर्जन, धनवान्, निर्धन, बलवान्, निर्बल, देवता, योगी तथा भोगी - सभी जिसे चाहते हैं, ऐसा मेरा भारत भूमण्डल में अनवरत सुशोभित हो रहा है ।

(4)

Equally desired by gods, demons and men of all ranks-noble and wicked, the rich and the poor, the strong and the weak, the yogis and voluptous, my Bhārata ever glows on the earth.

(५)

वेशभूषाशनोपासनापद्धति-
क्रीडनामोदसंस्कारवृत्त्यादिषु ।
यद्धि भिन्नं सदप्यस्त्यभिन्नं सदा
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(५)

वेशभूषा, खानपान, उपासनापद्धति, खेलकूद, आमोद-प्रमोद के साधन, धार्मिक-सामाजिक संस्कार एवं आजीविका के अनेक भेदों में (देश-कालानुरोध से) बँटा हुआ होने पर भी वस्तुत: (जो अन्दर से) एक है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(5)

Which is basically one in spite of its apparent diversity in dress, meals, modes of worship, sports, regalements, socio-religious ceremonies and occupations, that my Bhārata ever glows on the earth.

(६)

वेदभाभासितं सत्कलालासितं
रम्यसङ्गीतसाहित्यसौहित्यभूः ।
भारतीवल्लकीझंङ्कृतैझङ्कृतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(६)

वेदों की प्रभा से भासुर, सत्कलाओं से विलसित, रमणीय संगीत और साहित्य के फलने फूलने की भूमि तथा सरस्वती की वीणा की झंकारों से झंकृत मेरा भारत भूमण्डल में सदा शोभा प्राप्त करता है।

(6)

Resplendent with the glory of Vedas, adorned with various Arts, the meeting ground of charming Music and Literature, resounding with the jingles of Sarasvatī's Vīṇa, my Bhārata ever glows on the earth.

(७)

यत्त्रयीसांख्ययोगादिमार्गैर्युतं
जीवनं मुक्तमाकर्तुमाकांक्षति ।
शीलसन्तोषसत्यादिभी रक्षितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(७)

जो त्रयी, सांख्य, योग (शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, मुस्लिम, सूफी) आदि मार्गों से युक्त होकर जीवन को मुक्त करने की चेष्टा करता है एवं जिसकी शील, सन्तोष तथा सत्य आदि (उदार वृत्तियों से) रक्षा होती आयी है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(7)

Endowed with three Vedas, Sāṁkhya and Yoga etc. and well maintained with the modesty, patience and truth etc., anxious to make the life free from all worries, my Bhārata glows on the earth.

(८)

दर्शनज्ञानचारित्र्यसम्मेलनं
यत्र मोक्षस्य मार्गं भणन्त्यागमा: ।
ज्ञानमास्ते च भार: क्रियां वै विना
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(८)

जहाँ के आगमों ने दर्शन, ज्ञान और चारित्र्य का मोक्ष के मार्ग के रूप में उपदेश दिया है; जहाँ क्रिया के अभाव में ज्ञान एक बोझ ही माना गया है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(8)

Wherein scriptures declare the unity of Darśana (Philosophy), jñāna (Knowledge) and Cāritrya (Character) as the path to Salvation and wherein knowledge, without practice, is considered as burden, that my Bhārata ever glows on the earth.

(९)

जाह्नवीचन्द्रभागाजलैः पावितं
भानुजानर्मदावीचिभिर्लालितम् ।
तुङ्गभद्राविपाशादिभिर्भावितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(९)

गंगा और चनाब के जल से पवित्र, यमुना और नर्मदा की लहरों से दुलारा गया, तुंगभद्रा और व्यास आदि नदियों से प्रतिष्ठित मेरा भारत भूमण्डल में सदा शोभित हो रहा है ।

(9)

Made sacred by the waters of the Gaṅgā and the Chenab, nourished by the ripples of Yamunā and Narmadā, nurtured by the Tuṅgabhadrā and the Vipāśā (Bias) etc., my Bhārata ever glows on the earth.



(१०)

विन्ध्यसह्याद्रिनीलाद्रिमालान्वितं
　　शुभ्रहैमाद्रिहासप्रभापूरितम् ।
अर्बुदारावलीश्रेणिसम्पूजितम्
　　भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(१०)

विन्ध्याचल, सह्याद्रि तथा नीलगिरि की श्रेणियों से युक्त, शुभ्र हिमालय की हासच्छटा से पूरित तथा आबू और अरावली की श्रेणियों से सम्पूजित मेरा भारत भूमण्डल में अनवरत शोभा पा रहा है ।

(10)

Enriched by the ranges of Vindhyācala, Sahyādri and Nīlagiri, brightened by the smile of the Himalayas, adored by the Ābu and Arāvalī ranges, my Bhārata ever glows on the earth.



(११)

भाखडाबन्ध-दामोदरीयोजना-
बाणगङ्गाफरक्कादिसिक्तोर्जितम् ।
ब्रह्मपुत्रादिसन्दर्शिताम्बुच्छटं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(११)

भाखड़ा बांध, दामोदर घाटी-योजना, बाणगंगा-योजना, तथा फरक्का बांध आदि योजनाओं के द्वारा सींचा गया और ब्रह्मपुत्र आदि नदियां जिसमें अपने जल की छटा दिखाती हैं, ऐसा मेरा भारत भूमण्डल में सदा शोभायमान रहता है।

(11)

Irrigated by projects of Bāhkhrā Dam, Dāmodara Valley, Bāṇagaṅgā and Farakkā etc., having the Brahmaputra and other rivers, exhibiting the splendour of their waters, my Bhārata ever glows on the earth.



(१२)

विद्युदुत्पादने तैलसंशोधने,
इन्धनान्वेषणे लौहनिष्पादने ।
यन्त्रनिर्माणकार्ये समर्थं च सद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(१२)

बिजली के उत्पादन में, तेल के शोधन में, इंधन के अन्वेषण में, इस्पात बनाने में तथा विविध मशीनें बनाने में पूर्ण समर्थ मेरा भारत भूतल में लगातार शोभित हो रहा है ।

(12)

Self-dependant in power-production, oil-refining, fuel-searching, steel-production and machine-manufacturing, my Bhārata ever glows on the earth.



(१३)

रोगजालं चिकित्सालयस्थापनै-
रौषधोत्पादनैः शल्यशोधैस्तथा ।
नूतनाभिश्चिकित्साभिरुन्मूलयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१३)

अस्पतालों की स्थापना, औषधोत्पादन, शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में नवीन शोध तथा नयी-नयी चिकित्सा पद्धतियों से रोगों के जाल को काटता हुआ मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(13)

Eradicating the diseases with various therapies production of medicines, surgical researches and establishment of hospitals, my Bhārata ever glows on the earth.



(१४)

आर्यभट्टं वियन्मण्डले स्थापयत्
पोखरणभूमिगर्भेऽणुशक्तिं किरत् ।
शान्तिकार्येष्वणुं प्रेरयत्सन्ततं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१४)

'आर्यभट्ट' (उपग्रह) को अंतरिक्ष में स्थापित करने वाला, पोखरण की पृथ्वी के गर्भ में अणुविस्फोट करने वाला तथा शान्तिकार्यों में अणु-शक्ति को नियुक्त करने वाला मेरा भारत भूतल पर सतत सुशोभित रहता है ।

(14)

Launching the Āryabhaṭṭa in the orbit, exploding the Atomic energy underground in Pokharaṇa and always engaging the Atom for peace-cause, my Bhārata ever glows on the earth.



(१५)

अग्निमूर्जस्वलं   स्वत्वरक्षाकृते
        साधनैरात्मनीनैः सुसंसाधयत् ।
युद्धपोतांश्च सिन्धूरसि स्थापयद्
        भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१५)

अपने ही सीमित किन्तु अमोघ साधनों से ऊर्जस्वल 'अग्नि नामक प्रक्षेपास्त्र को भली प्रकार से (परीक्षण द्वारा)

सिद्ध करता हुआ एवं (स्वनिर्मित) युद्धपोतों को समुद्र के वक्षःस्थल पर स्थापित करता हुआ मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(15)

To protect self existence launching AGNI MISSILE with *her own limited but unfailing device and means and launching the warships on the bosom of the ocean, my Bhārata glows on the earth.*



(१६)

रेलनौकाविमानैस्तथा गन्त्रिभि
र्यानिकैस्तैश्च तैश्च प्रवेगान्वितैः।
य'च्चरैवे'ति नित्यं समुद्घोषयद्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(१६)

जो रेल, नौका, वायुयान, बस, मोटर, कार, टैम्पू, (बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, भैंसागाड़ी) आदि सवारियों के द्वारा 'चरैवेति, चरैवेति' (चलते रहो, चलते रहो)-सिद्धान्त की, मानो, घोषणा करता रहता है, वह मेरा भारत भूतल पर शोभित है।

(16)

Proclaiming the motto of 'Caraiveti' (walk forward for ever) through the ranning Railway trains, boats, aeroplanes, buses, motors, cars, tempos, and other vehicles, my Bhārata ever glows on the earth.



१७

यद्बरौनी-भिलाई-बुकारोस्वनैः
स्वोन्नतिस्यन्दनोत्थं शुभं घर्घरम् ।
दिक्षु विस्तारयद् वीक्ष्यते सर्वदा
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(१७)

जो बरौनी, भिलाई तथा बोकारो के संयन्त्रों की ध्वनि के बहाने अपनी उन्नति के रथ के शुभ घर्घर-स्वान को दिशाओं में सर्वदा फैलाता हुआ सा दिखाई देता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(17)

Where the rumble produced by the wheels of the chariot of progress is resounding in all the directions through the clatter of Baraunī, Bhilāi, and Bokāro Projects, that my Bhārata glows on the earth.



(१८)

कर्दमाक्रान्तवीथिषु सौधेषु वा
यस्य पादातमार्गेषु गेहेषु वा ।
जीवनं लोकसेवापरं लक्ष्यते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(१८)

जिसकी कीचड़ से भरी गलियों, महलों, पैदल-मार्गों (फुटपाथों) अथवा घरों में (लोगों का) जीवन समाज की सेवा में लगा हुआ दिखाई देता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(18)

Where the life of the dwellers of slums, palacial buildings, footpaths and houses is equally dedicated to the service of the humanity, that my Bhārata ever glows on the earth.



(१६)

व्यावृतास्याः समस्याः समाधाय यत्
स्वावलम्बं समालब्धुमाकांक्षति ।
मार्गमुच्चावचं लंघयित्वा चलद्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(१६)

मुंह फाड़े हुई समस्याओं का समाधान करके जो स्वावलम्बन प्राप्त करने की इच्छा कर रहा है एवं जो ऊबड़-खाबड़ रास्तों को पार करता हुआ (उन्नति के पथ पर आगे बढ़ा) चला जा रहा है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(19)

Which aims at attaining the comprehensive self-dependence by solving burning problems and which goes ahead crossing the uneven path, that my Bhārata glows on the earth.



(२०)

विश्वनाथं महाकालमाराधयद्
एकलिङ्गं भजद् वेंकटेशं स्मरत्।
कालिकां पूजयद् वैष्णवीं च स्तुवद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(२०)

(वाराणसी में) बाबा विश्वनाथ और (उज्जैन में) महाकालेश्वर की आराधना करता हुआ, (उदयपुर के निकट) एकलिंग जी का भजन करता हुआ, (तिरुपति में) भगवान् वेंकटेश्वर का स्मरण करता हुआ, (कालका तथा कलकत्ता में) काली की पूजा करता हुआ (कटरा जम्मू में) वैष्णवदेवी की स्तुति करता हुआ मेरा भारत भूमण्डल में सदा सुशोभित रहता है।

(20)

Worshipping Viśvanātha (in Varanasi), Mahākāleśvara (in Ujjain), Ekaliṅga (in Udaipur) and Veṅkateśvara (in Tirupati), eulogising Kālikā (in Calcutta and Kalka) and Vaiṣṇava Devi (in jammu) my Bhārata ever glows on the earth.



(२१)

शंप्रदं शंकरं माधवं राघवं
पार्वतीं राधिकां जानकीं च स्तुवत् ।
विट्ठलं बुद्धदेवं जिनं च स्मरद्
भूतले भाति मेनाऽरतं भारतम् ।

(२१)

जगत् के कल्याणकर्ता उमा-महेश, राधा-कृष्ण और सीता-राम की स्तुति करता हुआ तथा विट्ठल, बुद्धदेव तथा जिनेन्द्र का स्मरण करता हुआ मेरा भारत भूमण्डल में अनवरत सुशोभित रहता है ।

(21)

Doxologizing the propitious Lord Śaṅkara, Kṛṣṇa and Rāma alongwith Pārvatī, Rādhā and Sītā respectively, and meditating Viṭṭhala and Buddha, my Bhārata ever glows on the earth.



(२२)

अर्थकामान्वितं धर्ममोक्षान्वितं
भक्तिभावान्वितं ज्ञानकर्मान्वितम् ।
नैकमार्गैः प्रभुं चैकमाराधयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।

(२२)

अर्थ और काम से युक्त, धर्म और मोक्ष से युक्त, भक्तिभाव से युक्त, ज्ञान और कर्म से युक्त तथा अनेक मार्गों से एक प्रभु की आराधना करता हुआ मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(22)

Invested with Artha and Kāma, Dharma and Mokṣa Bhakti and jñāna, worshipping the one Almighty God with so many paths, my Bhārata ever glows on the earth.



(२३)

संस्कृतं प्राकृतं तामिलं तेलुगुं
कन्नडं कैरलीं बांगलामाङ्गलाम् ।
वाचमन्यां च तां तां ब्रुवद् वर्धते
राष्ट्रभाषायुतं मामकं भारतम् ॥

(२३)

संस्कृत, प्राकृत, तामिल, तेलुगु, कन्नड़ी, कैरली (मलयालम्), बंगला, अंग्रेजी तथा (गुजराती, महाराष्ट्री, उर्दू, उड़िया, असमिया, कोंकणी आदि) अनेक भाषाओं को बोलता हुआ राष्ट्रभाषा (हिन्दी) से युक्त मेरा भारत वर्धित हो रहा है।

(23)

Speaking the Samskṛta, Prākṛta, Tāmil, Telugu, Kannaḍa, Malayālam, Bānglā English and many other languages alongwith Lingua Franca, my Bhārata ever glows on the earth.



(२४)

व्यासवाल्मीकिरत्नाकरैरुज्ज्वलं
स्वादुकादम्बरीपानलुब्धं सदा ।
कालिदासेन भासेन संद्योतितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(२४)

(महाभारत तथा पुराणों के कर्ता) व्यास, (रामायण के कर्ता) वाल्मीकि एवं (हरविजय के कर्ता) रत्नाकर से समुज्ज्वल, (बाण-भट्टप्रणीत) स्वादु कादम्बरी के पान के लिए सदा लालायित तथा कालिदास और भास के द्वारा चमकाया गया मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(24)

Brightened with Vyāsa, Vālmīki and Ratnākara, always anxious to taste the Kādambarī, illuminated with Kālidāsa and Bhāsa, my Bhārata ever glows on the earth.



(२५)

मूलरामायणं　पम्परामायणं
　　कम्बरामायणं जैनरामायणम् ।
कृत्तिवासादिरामायणं　श्रावयद्
　　भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(२५)

मूलरामायण, पम्परामायण, कम्बरामायण, जैनरामायण, कृत्तिवासरामायण (तथा दिव्यरामायण, लोकरामायण, अद्भुतरामायण, सुगमरामायण, अध्यात्मरामायण, भुशुण्डि-रामायण तथा भावार्थरामायण) आदि अनेक रामायणों (की कथा) को सुनाता हुआ मेरा भारत भूतल पर अनवरत सुशोभित रहता है ।

(25)

Reciting the story of Rāma through Mūlarāmāyaṇa, Pamparāmāyaṇa, Kambarāmāyaṇa, Jainarāmāyaṇa, Krittivāsarāmāyaṇa and other Rāmāyaṇas, my Bhārata ever glows on the earth.



(२६)

योगवासिष्ठगीतामहाभारतै-
ग्रंथरत्नैश्च तैस्तैः प्रबुद्धं तथा ।
मानसं बीजकं सूरसिन्धुं दधद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(२६)

योगवासिष्ठ, गीता, महाभारत तथा अन्यान्य श्रेष्ठ ग्रन्थों से प्रबुद्ध एवं रामचरितमानस, कबीर-बीजक तथा सूरसागर को धारण करने वाला मेरा भारत भूतल पर अनवरत सुशोभित रहता है।

(26)

Awakened with great books like Yogavāsiṣṭha, Gītā, Mahābhārata etc. and having the Rāmācaritamānasa, Kabīrabījaka and Sūrasāgara, my Bhārata ever glows on the earth.



(२७)

गद्यपद्याञ्जितं श्रव्यदृश्याञ्जितं
गीतनृत्याञ्जितं लोकवेदाञ्जितम् ।
सप्रसादं समाधुर्यमोजोन्वितम्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(२७)

गद्य, पद्य, श्रव्यकाव्यों, दृश्यकाव्यों, गीतों, विविध नृत्यों, लोक एवं वेदों में अभिव्यक्त तथा प्रसाद, माधुर्य और ओज से संवलित मेरा भारत भूतल पर सदा शोभित रहता है ।

(27)

Revealed through the poetry and prose, audible and visual compositions, songs and dances, folklore and Veda and replete with lucidily, sweetness and vigour, my Bhārata ever glows on the earth.



(२८)

यच्च तीर्थैः पवित्रैर्व्रतैरुत्सवैः
पर्वभिर्दर्शनीयैः स्थलैः शोभितम् ।
यच्च नानाजयन्तीगणैः राजितम्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(२८)

जो (हरिद्वार, मथुरा, प्रयाग, काञ्ची, काशी, द्वारका, रामेश्वर, बदरीनारायण, केदारनाथ, पुरी, पुष्कर, पावापुरी, बोधगया पटना साहिव, अजमेर, अमृतसर, हेमकुण्ड, आदि अनेक तीर्थों, (शिवरात्रि, जन्माष्टमी, रमजान, आदि) व्रतों, (हरियाली तीज आदि) उत्सवों, (श्रावणी, पर्यूषण पर्व, पन्द्रह अगस्त, तथा गणतन्त्र-दिवस आदि धार्मिक तथा राष्ट्रीय) पर्वों, (ताजमहल, खजुराहो, नालन्दा, राजगीर, कन्याकुमारी आदि) दर्शनीय स्थलों और (तुलसी-जयन्ती, तानसेन-जयन्ती, हरिदास-जयन्ती, त्यागराज-जयन्ती, कालिदास-जयन्ती आदि अनेक) जयन्तियों से सुशोभित है, वह मेरा भारत भूतल पर चमक रहा है ।

(28)

Which is beautified with many sacred tirthas, vows, celiberations, festivals worthseeing places and jayantis, that my Bhārata glows on the earth.



(२६)

द्वारकां सेतुबन्धं पुरीं बदरिकां
तिरुपतिं मधुपुरीं चाजमेरं दधत् ।
पुष्करामृतसरस्तीर्थराजैर्युतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(२६)

(पश्चिम में) द्वारका, (दक्षिण में) सेतुबन्ध रामेश्वर, (पूर्व में) जगन्नाथपुरी, (उत्तर में) बदरीनाथ, (तथा तत्तत् प्रदेशों में) बालाजी तिरुपति वेंकटेश्वर, मथुरा, अजमेर, पुष्कर, अमृतसर एवं तीर्थराज प्रयाग आदि पवित्र स्थानों से युक्त मेरा भारत भूमण्डल में सदा सुशोभित रहता है ।

(29)

Sanctified with Dvārakā (in the west) Setubandha Rāmeśvaram (in the south), Jagannāthapurī (in the east), Badarīnārāyaṇa (in the north), Bālājī Tirupati, Mathurā, Ajmer Sharif, Puṣkara, Amritsar and Tīrtharāja Prayāga, my Bhārata ever glows on the earth.



(३०)

कुम्भसिंहस्थवैशाखिमुक्तेश्वर-
सोनपुरादि - मेलापकै रञ्जितम् ।
रासलीलायुतं रामलीलायुतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(३०)

(प्रयाग, हरद्वार, नासिक तथा उज्जैन में होने वाले) कुम्भ, सिंहस्थ, वैसाखी, गढ़मुक्तेश्वर, सोनपुर (हरिहर क्षेत्र) आदि के वड़े बड़े मेलों सें रंगबिरंगा तथा रासलीलाओं एवं रामलीलाओं सें युक्त मेरा भारत भूमण्डल में सदा शोभायमान रहता है ।

(30)

Colourful with the fairs of Kumbha, Simhastha, Baisākhī, Garhamukteśvara and Sonapore, showing the Rāmalīlā and Rāsalīlā, my Bhārata ever glows on the earth.



(३१)

हस्तिगुंफामजन्तामलोरां दधत्
खर्जुराहोगयासारनाथैर्लसत् ।
ताजकोणार्कविष्णुध्वजैर्मण्डितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(३१)

हाथीगुम्फा, अजन्ता और ऐलोरा को धारण करने वाला, खजुराहो, बोधगया और सारनाथ से सुशोभित तथा ताज-महल, कोणार्क और (महरौली स्थित) विष्णुध्वज से मण्डित मेरा भारत भूतल पर अनवरत सुशोभित हो रहा है ।

(31)

Endowed with caves of Elephenta, Ajantā and Elorā, adorned with Khajurāho, Bodhagayā and Sāranātha, resplendent with Taj Mahal, Koṇārka aud Viṣṇudhvaja (Mehrauli Iron Pillar, Delhi), my Bhārata ever glows on the earth.



(३२)

होलिकादशहरापर्वकोजागरी-
पोंगलश्रावणीदीपमालामयम् ।
लोहड़ीदौणमाद्युत्सवैः पूरितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(३२)

होली, दशहरा, कोजागरी (शरत्पूर्णिमा), पोंगल, श्रावणी (रक्षाबन्धन), दीपावली, लोहड़ी, ईद तथा ओणम आदि उत्सवों से परिपूर्ण मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(32)

Splendent with Holī, Daśhāhāra, Kojāgirī (Śaratpurṇimā), Poṅgala, Śrāvaṇī (Rakṣabandhana), Dīpāvalī, Lohṛī, Īd, Oṇam and other festivals, my Bhārata ever glows on the earth.



(३३)

ओडिसीं मणिपुरीं कथक-गर्बादिकं
कूचिपूडिं च गिद्दां छऊं भंगडाम् ।
कथकलीं डाण्डियां भरतनाट्यं दधत्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(३३)

ओडिसी, मणिपुरी, भरतनाट्य , कुचिपुडी, कत्थक, डांडिया-रास, कथकली, गरबा तथा भंगड़ा नृत्यों की शोभा का विस्तार करता हुआ मेरा भारत भूतल पर अनवरत सुशोभित रहता है ।

(33)

Presenting beautifully various dances, namely, Oddissi Maṇipuri, Bharatanāṭyam, Kucipudi, Katthaka, Ḍānḍia Rāsa, Kathakali, Garabā and Bhangrā, my Bhārata ever glows on the earth.



(३४)

मन्दिरैर्मस्जिदैश्चैत्यगिर्जागृहै-
रार्यगेहैर्गुरुद्वारकैर्भ्राजितम् ।
कर्मभूः शर्मभूर्धर्मभूर्मर्मभूः
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(३४)

मन्दिरों, मस्जिदों, मठों, गिर्जाघरों, आर्यसमाजमन्दिरों तथा गुरुद्वारों से शोभित, कर्म, शील, धर्म तथा जीवन के मर्म को समझने की स्थली मेरा भारत भूतल पर अनवरत चमक रहा है ।

(34)

Adorned with Temples, Mosques, Monasteries (Budhist Shrines)), Churches, Āryasamājas, Gurudvārās and the meeting ground of the work, repose, duty and secrets of life, my Bnārata ever glows on the earth.



(३५)

यत्र मन्दाकिनी पापसंहारिणी
यत्र गोदावरी चारुसंचारिणी।
देववाणी च यत्रास्ति मोदाकुला
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥

(३५)

जहाँ मन्दाकिनी पापों का संहार करती है, जहाँ गोदावरी चारु संचरण करती है, और जहाँ मोदाकुल देववाणी (संस्कृत भाषा) निवास करती है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(35)

Where Mandākinī extirpates all the sins, where flows Godāvarī and where mirthful Devavāṇi (Sanskrit) resides, that my Bhārata glows on the earth.



(३६)

कृष्णलीलायुतं वेणुसंनादितम्
पावनं भावनं यत्र वृन्दावनम् ।
शंभुशूलस्थिता यत्र वाराणसी
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(३६)

जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं से युक्त एवं उनकी मुरली से संनादित पवित्र प्यारा वृन्दावन है एवं जहाँ शिवजी के त्रिशूल पर टिकी (तीन लोक से न्यारी) वाराणसी है, वह मेरा भारत भूतल पर शोभित हो रहा है ।

(36)

Where lies the pious and beautiful Vṛndāvana witnessing Kṛṣṇa exhibiting His Līlās and playing on His flute and where lies the Vārāṇasī located on the trident of Lord Śiva, that my Bhārata glows on the earth.



(३७)

यत्र वृन्दावने गोधनं चारयन्
स्वीयमन्दस्मितैः पापमुन्मूलयन् ।
चारुकादम्बिनीनीलगोपालको
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।

(३७)

जहाँ चारु मेघमाला के समान श्यामवर्ण गोपाल (कृष्ण) वृन्दावन में गोधन को चराता हुआ अपनी मधुर मुस्कान से समस्त पापों का उन्मूलन कर देता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(37)

Where cloud-coloured Lord Kṛṣṇa, while grazing His cows, extirpates all the sins with His sweet smile, that my Bhārata glows on the earth.



(३८)

भूधराकाशतोयेषु रक्षापरो
यत्र शत्रून् भटो हेलया नाशयेत् ॥
यत्र वीराङ्गना युद्धभूमिं गता
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(३८)

जहाँ पहाड़ों पर, आकाश में तथा समुद्र में तैनात (देश की) रक्षा करने में तत्पर वीर जवान खेल-खेल में शत्रु का मटियामेट कर सकता है और जहाँ (कैकेयी, लक्ष्मीबाई आदि अनेक) वीरांगनाएँ युद्ध के मैदान में अपना पराक्रम दिखा चुकी हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है।

(38)

Posted on mountains, in the sky and on the ocean for the defence of Motherland, where, everready soldiers can liquidate the enemy in a trtce, and where amazons used to go to the battle-fields, that my Bhārata ever glows on the earth.



(३९)

प्रेरणादायकं सत्कथागायकं
ज्ञानविज्ञानतेजोबलाधायकम् ।
दुःखदारिद्‌यदग्धान् सदा पालय-
न्मोदते मे सदा पावनं भारतम् ॥

(३९)

प्रेरणा देने वाला, (सत्यनारायण, ध्रुव, प्रह्लाद, शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र, भीष्म, लक्ष्मण, हनुमान् आदि से सम्बद्ध तथा हितोपदेश, कथासरित्सागर और अन्यान्य) सत्कथाओं को गाने वाला, ज्ञान, विज्ञान, तेज और बल का निधान एवं दुःख और ग़रीबी से दग्ध लोगों का सदा पालन करने वाला मेरा पवित्र भारत सदा प्रसन्न रहता है ।

(39)

Giving inspiration to all, narrating the stories of saints (or narrating the good stories), repository of knowledge, science, splender and vitality and always providing refuge to the people scroched with the sorrow and poverty, my Bhārata ever glows on the earth.



(४०)

कोकिलैः कूजितं षट्पदैर्गुञ्जितं
केकिभिर्नृत्यपारङ्गतैर्नादितम् ।
सारिका-कीर-वादप्रवादैर्युतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(४०)

जिसमें कोकिलें कूजती हैं, जिसमें भौंरे गूँजते हैं, जिसे नृत्य-प्रवीण मयूर अपनी बोली (केका) से शब्दायमान करते है और जिसमें तोता-मैंना वाद-विवाद करते रहते हैं, वह मेरा भारत भूतल पर अनवरत सुशोभित रहता है ।

(40)

Warbled by the kuckoos, buzzed by the beetles, resounded by voices of dance-expert peacocks, made interesting by the altercations of Totā (parrot) and Mainā (a black Indian bird famous for its melodious notes), my Bhārata ever glows on the earth.



(४१)

कुंकुमैश्चन्दनैः पुष्करैः पाटलैः
सर्वगं सच्चिदानन्दमाराधयत् ।
सर्वभूतेषु दृष्टि समां धारयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(४१)

केसर, चन्दन, कमलों एवं गुलाबों से जो सर्वव्यापी सत्, चित् एवं आनन्द स्वरूप भगवान् की आराधना करता है और जो (विद्याविनयसम्पन्न) ब्राह्मण, गौ, हाथी, एवं चाण्डाल में समानता के विचार का पक्षधर है, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(41)

Adoring the Omnipresent Supreme Soul, the ultimate resort of Truth, Gonsciousness and Happiness, offer-ing Him the sffron, sandalwood paste, lotuses and roses, announcing the equality of Brāhmaṇa, Cow, Elephant and Cāṇḍāla, my Bhārata ever glows on the earth.



(४२)

मेघमालाकुलं विद्युदुद्योतकं
काशहासान्वितं सर्षपश्रीयुतम् ।
पक्वगोधूमसस्यैश्च सम्पूरितं
भूतले भाति मेऽमारतं भारतम् ॥

(४२)

जो (वर्षा ऋतु में) मेघमालाओं से युक्त और बिजली को चमकाने वाला है, (शरद् ऋतु में) कांस की हँसी से युक्त है, (वसन्त ऋतु से) सरसों की शोभा से युक्त है तथा (ग्रीष्म ऋतु में पके हुए गेहूं तथा अन्य अनाजों से भरा रहता है, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(42)

Overcast with dark clouds, splendid with the streaks of lightning (in rainy season), resplendent with the smile of Kāśa (a particular grass) (in winter season), beautified with blosom of mustard (in spring days) and invested with the heaps of ripened wheatgrains (in summer), my Bhārata ever glows on the earth.



(४३)

श्यामलानोकहश्रीसमृद्धान्तरं
पद्मनेत्रैस्सरोभिस्समालोकितम् ।
निर्झरैः श्वेतफेनैस्समृद्धाञ्चलं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(४३)

जो श्यामल वृक्षों की शोभा से समृद्ध है, जो कमलरूपी नेत्रों को धारण करने वाले तालाबों से देखा गया (अथवा प्रकाशित) है और सफेद झागों वाले झरनों से जिसके अंचल समृद्ध हैं, ऐसा मेरा भारत भूतल पर सदा शोभित रहता है।

(43)

Where regions are enriched with the verdurous beauty of trees, which is glanced by the lotus-eyed pondsand where hilly areas are foaming with cascades, that my Bhārata ever glows on the erath.



(४४)

हंसकारण्डवैस्सारसैर्वर्तकैः
क्रौञ्चकाकैः पिकैः खञ्जरीटैः शुकैः ।
तित्तिरैष्टिट्टिभैः श्येनगृद्ध्रैश्चितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(४४)

हंस, कारण्डव, सारस, बत्तक, कौञ्च, काक, कोयल, खंजन, तोता, तीतर, टिट्टिभ, बाज तथा गिद्ध आदि (सात्त्विक, राजस तथा तामस स्वभाव वाले अनेक) पक्षियों से युक्त मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(44)

Variegated with the swans, kārandavas, cranes, ducks, krauñcas, crows, cuckoos, wagtails, parrots, partridges, pewits, falcons and vultures, my Bhārata ever glows on the earth. (The birds are used here as the symbols of Sāttvika, Rājasa and Tāmasa beings).



(४५)

पण्डितैर्योद्धृभिर्वणिजैः कार्मिकैः
शस्त्रिभिः शास्त्रिभिर्वर्णिभिर्गेहिभिः ।
वानप्रस्थैश्च संन्यासिभिर्मण्डितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(४५)

विद्वानों, योद्धाओं, व्यापारियों, मजदूरों, शस्त्रविद्यों, शास्त्रविद्यों, ब्रह्मचारियों, गृहस्थों, वानप्रस्थों तथा संन्यासियों से मण्डित मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(45)

Hallowed with the scholars, warriors, merchants, labourers, persons well-versed in armoury and scriptures, Brahmacārīs, Gṛhasthas Vānaprasthas and Saṁnyāsins, my Bhārata ever glows on the earth,



(४६)

यत्र हूणास्तुरुष्काः शका बर्बरा
म्लेच्छका यावना एत्य याता लयम् ।
यत्र चार्या अनार्या मुदैकत्रिता
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(४६)

जहाँ हूण, तुर्क, शक, बर्बर, म्लेच्छ, यवन आदि अनेक जातियाँ आकर पच गयीं एवं जहाँ आर्य और अनार्य प्रसन्नतापूर्वक इकट्ठे हो गये, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(46)

Where the congregation of the Hūṇas, Turks, Śakas, Barbaras, Mlecchas and Yavanas etc. got absorbed and where Āryans aud Non-Āryans are living mirthfully togather, that my Bhārata glows on the earth.



(४७)

क्षारमम्भोधिमापीय, यस्मिन्, स्थितै-
नारिकेलैः सुधोद्गारिभिः श्यामलः ।
शंकराचार्यदः केरलो राजते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(४७)

जिसमें खारे समुद्र को पीकर अमृत के समान मधुर जल का उद्गिरण करने वाले नारियल के पेड़ों से श्यामल बना हुआ जगद्गुरु शंकराचार्य को देने वाला केरल विराजमान है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(47)

Wherein Kerala, the birthplace of Śankaracārya, green with the coconut trees absorblng the saline water of the sea and reproducing nectar (in the form of coconut wa'er), exhibits its verdure, that my Bhārata glows on the eerth.



(४८)

गोस्तनीसेवपूर्णं मधुप्लावितम्
देवदारूद्वहं नौगृहैः रञ्जितम् ।
सुन्दरं यस्य काश्मीरकं राजते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

:

(४८)

जिसका द्राक्षा (अंगूरों) और सेवों से परिपूर्ण, मधु से प्लावित, देवदारुओं को धारण करने वाला तथा नौकागृहों से सुशोभित काश्मीर अत्यन्त ख़ूबसूरत लगता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(48)

Whose Kashmir appears graceful, replete with vine-yards and apple-orchards, overflowing with honey, encircled with pines and adorned with houseboats, that wy Bhārata ever glaws on the earth.



(४६)

रामकृष्णावतारस्थले विश्रुते
नेहरूमालवीयादिरत्नोज्ज्वले ।
उत्तरे यस्य देशेऽस्ति तीर्थाधिपो
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(४६)

जिसके राम और कृष्ण के अवतार-स्थल तथा नेहरू और मालवीय जी आदि अनेक (नर) रत्नों से उज्ज्वल उत्तर-प्रदेश में तीर्थराज प्रयाग विराजमान है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(49)

Wherein, Uttar Pradesh, the land of incarnations of Rāma and Kṛshṇa, and brilliant with jewels like Nehru and Mālavīya etc. is sanctified with the Soverign Tīrtha Prayāga, that my Bhārata glows on the earth.



(५०)

गण्डकीशोणगङ्गायुता पाटली
लिच्छवीसेविता चापि वैशालिका ।
भूषयामासतुर्यस्य पूर्वाञ्चलं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(५०)

गण्डक, शोण और गंगा से सेवित पाटलिपुत्र (पटना) और लिच्छवी राजाओं के द्वारा सेवित वैशाली ने जिसके पूर्वांचल को अलंकृत किया, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(50)

Where eastern region was graced with Pāṭaliputra irrigated by Gaṇḍaka, Śoṇa and Gaṅgā and with Vaiśālī ruled by Licchivis, that my Bhārata glows on the earth.



(५१)

श्रीदयानन्दगान्ध्युज्ज्वलं गुर्जरं
स्वर्णबङ्गं विवेकारविन्दोज्ज्वलम् ।
नानकाद्युज्ज्वलं पञ्चतोयं दधत्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(५१)

स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गाँधी आदि से उज्ज्वल गुजरात, स्वामी विवेकानन्द तथा योगिराज अरविन्द से उज्जवल सोनार बंगाल एवं गुरु नानक आदि से उज्ज्वल पंजाब को धारण करता हुआ मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(51)

Consisting of Gujrat sublime with swāmī Dayānanda and Mahātmā Gāndhī, of Golden Bengal brilliant with Swāmī Vivekānanda and Yogirāja Arobindo and of Panjab glorified with Guru Nānaka etc., my Bhārata glows on the earth.



(५२)

गोखलेबालगंगाधराराधितं
श्रीशिवाजीतुकारामसम्बोधितम् ।
यन्महाराष्ट्रकं सह्यश्रृंगोच्छ्रितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(५२)

जिसका, गोखले तथा बालगंगाधर तिलक के द्वारा आराधित एवं शिवाजी और भक्त तुकाराम के द्वारा सम्बोधित महाराष्ट्र सह्याद्रि के शिखरों से समुन्नत है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(52)

Whose Mahārāṣṭra, worshipped by Gokhale and Bālagaṅgādhara Tilaka, awakened by Śivājī and Tukārāma, appears splendid with towering peaks of Sahyādri, that my Bhārata glows on the earth.



(५३)

त्यागराजस्वरैर्मोहितं तामिलं
मध्यदेशं तथा चम्बलालंकृतम् ।
यच्च सोल्लासमासाममंके दधद्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(५३)

जिसका तमिलनाडु त्यागराजा के संगीतमय स्वरों से मोहित है, जिसका मध्यप्रदेश चम्बल नदी से अलंकृत है और जो सोल्लास आसाम को अपनी गोद में धारण करता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(53)

Whose Tamilnadu feels enchanted with the melodies of Thyāgarāja whose Madhya Pradesh is girdled with Cambala river and who sustains enthusiastic Assam in her lap, that my Bhārata ever glows on the earth.



(५४)

गोम्मटेशानुभावप्रभापूरितम्
यस्य कर्नाटकं चन्दनामोदितम् ।
यस्य राजस्थलं वीरगाथांकितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(५४)

जिसका कर्नाटक (श्रवणवेलगोल में) गोम्मटेश्वर की विशाल प्रतिमा की गरिमामय शोभा को धारण करने वाला एवं चन्दन से ग्रमोदित है ग्रौर जिसका राजस्थान वीरगाथाग्रों सें ग्रंकित है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(54)

Whose Karnataka encompassed with the granduer of the collosal idol of Gommṭeśvara and is fragrant with sandal, whose Rajasthan is inscribed with the legends of valiance, that my Bhārata ever glows on the earth.



(५५)

आन्ध्रनागारुणादिप्रदेशेषु यत्
स्वीयभूतिं तनोति प्रभूतां सदा।
यस्य सर्वस्थलेष्वस्ति प्रत्यग्रता
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥

(५५)

जो आन्ध्रप्रदेश, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश (तथा हिमाचल प्रदेश) आदि राज्यों में अपनी प्रभूत विभूति का वितान करता है एवं जिसके सभी स्थानों से ताज़गी (नवीनता) व्याप्त है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(55)

Which pleasantly reveals its fullsome beauty in all the states namely Andhra. Nagaland, Ārunachala Pradesh etc. and where everywhere pervades an unabated freshness, that my Bhārata ever glows on the earth.



(५६)

विक्रमादित्यवेतालगाथांकिते
मालवे रेजतुर्यस्य लोकश्रुतौ ।
भर्तृपूर्वो हरिश्चाथ सान्दीपनि-
र्भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(५६)

जिसके विक्रमादित्य और वेताल की कहानियों से युक्त मालव प्रदेश में जगत्प्रसिद्ध भर्तृहरि और गुरु सान्दीपनि प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(56)

Wherein, Mālava, Characterised with the tales of Vikramāditya and Vaitāla, had the famous Bhartṛhari and Guru Sāndīpani, that my Bhārata glows on the earth.



(५७)

यत्कुरुक्षेत्रमध्ये स्वयं श्रीहरिः
निष्क्रियं पार्थमाश्वासयद् गीतया ।
स्वीयरूपेण तं च व्यधात्कर्मठं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(५७)

जिसके कुरुक्षेत्र में निष्क्रिय अर्जुन को स्वयं श्रीहरि ने गीता के माध्यम से आश्वासन दिया एवं अपने (विराट) रूप (के दर्शन) से उसे कर्मठ बनाया, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(57)

Wherein, at the battlefield of Kuruksetra Lord Śrīkrṣṇa Himself inspired inactive Arjuna to regain his self-confidence with celestial song of Holy Gītā and made him active exhibiting him His colossal appearanrce, that my Bhārata glows on the earth.



(५८)

शुक्रतालास्पदे यस्य वैयासकिः
पापहन्त्रीं कथामाह साप्ताहिकीम् ।
यत्र चाद्याप्यवृद्धो वटो राजते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(५८)

जिसके (जिला मुजफ्फरनगरान्तर्गत) शुक्रताल नामक स्थान में व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी ने एक सप्ताह में पूर्ण होने वाली (श्रीमद्भागवत की) पापनाशक कथा (राजा परीक्षित को) सुनायी थी और जहाँ आज भी जटा रहित युवा वट वृक्ष विराजमान है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(58)

Wherein Śukadeva, the son of Vedavyāsa, told the week-ending sin-expelling religious dicourse of Śrimadbhāgavata (to King Parīkṣita) at the place known as Śukratāla where even today ever juvenile banyan tree stands magnanimously, thāt my Bhārata glows on the earth.



(५९)

जन्वरीमासषड्विंशके वासरे
इण्डियागेटपार्श्वस्थितो दर्शकः ।
यस्य शोभाप्रवाहे मुदा मज्जति
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(५९)

छब्बीस जनवरी के दिन, इण्डिया गेट के दोनों ओर बैठा हुआ दर्शक-समूह, जिसके, शोभाप्रवाह में मस्त होकर डुबकियाँ लगाता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(59)

Where, sitting on both sides of the path to India Gate, the spectators are absorbed in glamour on the 26th day of January, that my Bhārata glows on the earth.



(६०)

यस्य दिल्लीस्थिते रक्तदुर्गे शुभे
　　संसदश्चोत्तमांगे त्रिरंगध्वजः ।
सार्वभौमीं स्वसत्तां वदत्युल्लसन्
　　भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६०)

जिसके दिल्ली स्थित लालकिले पर तथा संसद भवन के ऊपर (फहराता) तिरंगा झण्डा अपनी सार्वभौम सत्ता की सोल्लास घोषणा करता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(60)

Wherein on the Red Fort and Parliament House of Delhi, Tricolour Flag, fluttering in the air, proclaims its Sovereignty, that my Bhārata glows on the earth.



(६१)

यन्मुनीनां तपस्यास्थली कथ्यते
यत्परब्रह्मलीलास्थली विद्यते ।
यच्च नानाकथानां निधी राजते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६१)

जो मनुष्यों की तपस्या स्थली कहा जाता है, जो परब्रह्म (के नाना अवतारों) की लीलास्थली है, और जो अनेक कथाओं का खजाना है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(61)

Which is acclaimed as the penance-place of ascetics the Līlā place of Parabrahman (Absolute) and the the reservoir of various tales and legends, that my Bhārata glows on the earth.



(६२)

यस्य वैदेशिककैर्यात्रिभिः कीर्तिता
चारुकीर्तिः ककुब्व्यापिनी प्रोज्ज्वला ।
यस्य धर्मो विदेशैः समालिंगितो
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६२)

जिसकी दिग्दिगन्तव्यापी समुज्ज्वल सुन्दर कीर्ति का (ह्वेनसांग फाह्यान आदि) विदेशी यात्रियों ने गान किया है और जिसके धर्म को विदेशों ने (सहर्ष) स्वीकारा है, वह मेरा भारत भूतल पर शोभायमान है।

(62)

Whose brilliant fame, spreading in all directions, is sung by foreign treavellers and whose religions are embraced by foreign countries, that my Bhārata glows on the earth.



(६३)

यद्दरिद्रव्यथां हर्तुमाकांक्षति
यच्च वैज्ञानिकीमुन्नतिं वाञ्छति।
यन्निजाध्यात्मरत्नप्रभालोकितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६३)

जो गरीबों की पीड़ा को दूर करने का इच्छुक है, जो वैज्ञानिक उन्नति का अभिलाषुक है, एवं (साथ ही) जो अपने अध्यात्म-रत्नों की प्रभा से आलोकित रहता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(63)

Which desires to remove the sufferings of the poor which aims at the scientific progress and which is brilliant with the help of its spirituality, that my Bhārata glows on the earth.



(६४)

वह्नि नभूकम्पझंझाजलप्लावनै-
भींषितं चापि यत्साहसं न त्यजेत् ।
ईतिभीतिप्रभावांस्तथा तर्जयेद्
भूतले भाति तन्नामकं भारतम् ।।

(६४)

जो आग, भूकम्प झंझावात तथा बाढ़से डराया जाने पर भी अपना साहस नहीं छोड़ता तथा (वक्त आने पर) ईति-भीतियों के प्रभावों को धमका सकता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(64)

which does not give up courage even if threatened by the fire, earthquakes, tornadoes, inundation and which can snub all the dread and distress, that my Bhārata glows on the earth.



(६५)

यस्य विश्वे समस्तेऽपि विद्योतते
पावनं नाम दिव्यं यशश्चोज्ज्वलम् ।
प्राणिसंघं च प्रीणाति यद्दर्शनम्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६५)

जिसका पावन नाम और उज्ज्वल यश समस्त विश्व में चमकता है और जिसके दर्शन से प्राणियों के समूह प्रसन्नता पाते हैं, वह मेरा भारतवर्ष भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(65)

Whose sacred name and fame effulges in the entire universe and the vision of which pleases the congregation of humanity, that my Bhārata glows on the earth.



(६६)

यन्मया गीयते यद्भजामि प्रियं
येन मह्यं प्रदत्ताः शुभाः प्रेरणाः ।
किञ्च यस्मै नमो मेऽस्ति यस्माद्बलं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(६६)

जो मेरे द्वारा गाया जाता है, जिसको मैं अत्यन्त प्यारा समझ कर भजता हूं, जिसने मुझे शुभ प्रेरणाएँ दी हैं, जिसके लिए मेरा प्रणाम समर्पित है और जिससे मुझे बल मिलता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(66)

Which is sung by me, whose dear image I worship, which has inspired me to perform goodness, before whom I bow and which vouchsafes me strength, that my Bhārata glows on the earth.



(६७)

यस्य संदृश्य संदृश्य शोभा नवा
यस्य संस्मृत्य संस्मृत्य गाथाः शुभाः ।
रोमहर्षो नृणां जायते वै सतां
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६७)

जिसकी नयी शोभा देख-देखकर एवं कल्याणकारिणी गाथाओं को याद कर करके सज्जनों को रोमांच हो आता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(67)

Viewing whose ever a new charm over and over again, remembering whose auspicious stories over and over again people are enraptured, that my Bhārata glows on the earth.



(६८)

यत्र सत्यं शिवं सुन्दरं राजते
रामराज्यं च यत्राभवत्पावनम् ।
यस्य ताटस्थ्यनीतिः प्रसिद्धिं गता
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(६८)

जहाँ सत्य, शिव और सुन्दर सुशोभित रहता है, जहाँ कभी पवित्र रामराज्य था और जिसकी तटस्थता की नीति जगत्प्रसिद्ध है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(68)

Where effulgcs the Truth, the Good and the Beautiful, where Rāmarājya, dedicated to social welfare, had its sway and whose policy of non-alignment has won fame in the world, that my Bhārata glows on the earth.



(६९)

वाजिराजिं गजालिञ्च न्यक्कुर्वता
पण्डितेन्द्रेण यस्मिल्लवङ्गी वृता ।
सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा प्रिया
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६९)

जिसमें घोड़ों के समूह एवं हाथियों की पंक्ति का तिरस्कार करते हुए पण्डितराज जगन्नाथ ने सिर पर कलश रखने वाली सुस्तनी प्यारी लवंगी को स्वीकार किया था, वह मेरा भारत भूतल पर चमकता है ।

(69)

Wherein rejecting the rows of horses and elephants Paṇḍitarāja Jagannātha chose only Lavaṅgī - his beloved with charming breast and bearing pitcher on her head, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७०)

साधकैस्सद्भिरध्यात्मचिन्तापरै-
देशभक्तै विपश्चिद्भिरापूरितम् ।
कर्षकैः कार्मिकैः स्विन्नगात्रैर्युतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(७०)

जो (योग तथा तन्त्र, ग्रादि के) साधकों (कबीर, नानक, ज्ञानेश्वर, रैदास, प्राणनाथ प्रभृति) सन्तों, (पतंजलि, कपिल, शंकर ग्रादि) ग्रध्यात्मचिन्तकों, (भक्तसिंह, ऊधमसिंह, चन्द्रशेखर ग्राज़ाद, मेजर ग्राशाराम त्यागी, हमीद, ग्रशफाकुल्ला, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, गान्धी, नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, श्री लालबहादुर शास्त्री ग्रादि) देशभक्तों तथा विद्वानों से परिपूर्ण (रहा है ग्रोर) है एवं जो पसीने से लथपथ शरीर वाले किसानों ग्रौर मजदूरों से युक्त है, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(70)

Overbrimmed with the meditators, saints, spiritual thinkers, artriots, scholars and sweating peasants and labourers, my Bhārata ever glows on the earth.



(७१)

मातृभूमेविपज्जालमुच्छेदयन्
मृत्युपाशं च कण्ठे सहर्षं धरन्।
भक्तसिंहोऽस्ति यत्रामरत्वं गतो
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(७१)

जहाँ जननी जन्मभूमि के विपज्जाल को काटता हुआ और मौत की फाँसी को अपने गले में सहर्ष पहनता हुआ भगतसिंह अमर शहीद हो गया, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है।

(71)

Wherein breaking the chains of Motherland's afflictions and inviting noose round his neck Bhagat Singh became immortal, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७२)

डोगराईस्थले राम आशायुतः
शत्रुटैंकान् विभिन्दन् खलाँस्तर्जयन् ।
मातृपूजापरो यत्र नाकं गतो
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(७२)

डोगराई में शत्रु (पाकिस्तान) के टैंकों को तोड़ता हुआ एवं दुष्टों को ललकारता हुआ मेजर आशाराम त्यागी जहाँ मातृ-भूमि की पूजा करता हुआ स्वर्गगामी हुआ, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(72)

Wherein, Major Āshārāma Tyāgī, worshipping Motherland, annihilating enemies' tanks and rebuking the malevolent persons, in Dogarāī battlefield made his Heavenly abode, that my Bhārata ever glows on the earth



(७३)

घर्घरस्वानपूर्वं पुरः प्रस्थितान्
शत्रुटंङ्कान् करीन्द्रानिव ध्वंसयन् ।
श्रीहमीदो बभौ केसरी यत्रतद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(७३)

घड़घड़ा कर सामने आते हुए शत्रु के टैंकों को ध्वस्त करने वाले युवक अब्दुल हमीद ने जहाँ हाथियों के झुण्ड को ध्वस्त करने वाले बब्बर शेर की शोभा धारण की, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(73)

Wherein took birth lion-like Abdul Hamid who killed the forthcoming and rumbling tank-elephants of enemy, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७४)

रक्तपातं विना शस्त्रपातं विना
यत्र संक्रान्तिरायाति मन्दस्मिता ।
येन विश्वं सदा शिक्ष्यते प्रेर्यते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(७४)

जहाँ खून-खराबे और हथियारों के टकराने के बिना ही मन्द मुस्कान के साथ क्रान्ति आ जाती है एवं जो विश्व को सदा शिक्षा और प्रेरणा देता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित रहता है ।

(*74*)

Where, without bloodshed or blows of weapons, the revolution comes with sweet smile, and which always inspires and educates the world, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७५)

यत्र हिंस्रः स्वपापैः स्वयं हिंस्यते
यत्र साधुः समत्वाद्भयान्मुच्यते ।
यत्र सत्यं जयं याति नैवानृतं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(७५)

जहाँ हिंसक अपने पापों सें स्वयं ही मर जाता है, जहाँ सज्जन अपनी धीरता और क्षमाशीलता से सभी भयों सें मुक्त हो जाता है और जहाँ सत्य की जय होती है न कि झूठ की, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित है ।

(75)

Wherein ferocious killer is killed by his own sins, where virtuous overcomes all the fears by his virtuousness, where the Truth is victorious not the falsehood, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७६)

यत्प्रजातन्त्ररक्षापरैर्मानवै-
नास्ति हीनं कदापि प्रभाभासुरम् ।
आत्मतेजोमयं तद्धर्यहिसामयं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(७६)

जो प्रजातन्त्र की रक्षा करने वाले मानवों से कभी विहीन नहीं रहता, जो अपनी प्रभा से चमकता रहता है, जो आत्मिक तेज से युक्त है, वह अहिंसामय मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(76)

Which is never devoid of the democracy-protecting persons and is brilliant, self-confident and non-violent, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७७)

यत्र सर्वंसहा मेदिनी राजते
यत्र शीलं परं भूषणं भण्यते ।
यत्र मौनं चकास्ति व्रतेषूत्तमं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(७७)

जहाँ की धरती सब कुछ सहन कर लेती है, जहाँ शील ही परम भूषण कहा जाता है, जहाँ मौन सभी व्रतों में उत्कृष्ट है, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित है ।

(77)

Where soil is all-forbearing, where modesty is called the best ornament, where silence is considered as the best vow, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७८)

सज्जनान् दुर्गतान् दुर्जनान् सद्गतान्
मानिता वारनारी विपन्ना वधूः ।
वीक्ष्य चित्तं कवेर्दूयते यत्र तद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(७८)

जहाँ सज्जनों की दुर्गति एवं दुर्जनों के ठाठ-बाट और बाजारू औरतों के सम्मान एवं गृहवधुओं की विपत्तियों को देखकर कवि का चित्त व्यथा से भर उठता है, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(78)

Where, seeing the noble in miserable state and the wicked in prosperous condition, prostitutes honoured and housewives distressed, the poet's heart feels aggrieved, that my Bhārata ever glows on the earth.



(७९)

दुःखदावानलैर्दग्धदेहान्नरान्
क्षुत्पिपासाकुलान् वृत्तिकष्टार्दितान् ।
वीक्ष्य कारुण्यपूर्णा नरा यत्र तद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(७९)

दुःख-दावानल से झुलसे हुए शरीर वाले, भूख-प्यास से व्याकुल तथा बेरोजगार लोगों को देखकर जहाँ के लोग करुणा से भर जाते हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित है ।

(79)

Wherein men feel pity when they see the people roasted with the wild fire of sorrows, threatened by thirst and hunger and tormented with unemployment, that my Bhārata ever glows on the earth.



(८०)

चञ्चलां राजलक्ष्मीमुलूकश्रितां
सर्वशुक्लां च वाणीं मरालस्थिताम् ।।
यत्र लोको यथेष्टं मुदा वन्दते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(८०)

जहाँ के लोग उल्लू की सवारी करने वाली चंचल राजलक्ष्मी अथवा हंस पर आरूढ़ सर्वशुक्ला सरस्वती की अपनी इच्छा के अनुसार प्रसन्नतापूर्वक आराधना करते हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित रहता है।

(80)

Wherein the devotees worship flickering Rājalakṣmī ascending on the chariot of owl, and all-white Sarasvatī ascending on the chariot of swan according to their own likings, that my Bhārata glows on the earth.



(८१)

लोकगीतेषु चित्तं यदीयं रतं
लोकनृत्येषु चितं यदीयं रतम्।
लोककृत्येषु चितं यदीयं रतं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८१)

जिसका दिल लोकगीतों में लगा रहता है; जिसका दिल लोकनृत्यों में रमा रहता है; जिसका दिल लोकाचारों में लगा रहता है; वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित रहता है।

(81)

Whose mind is absorbed in folk songs, folk dances and folk customs, that my Bhārata glows on the earth.



(८२)

यत्र पुण्याः सरित्सङ्गमा राजिताः
यत्र पाषाणतश्चामृतं स्यन्दते ।
भावना यत्र बोधेन सङ्गच्छते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८२)

जहाँ नदियों के पुण्य संगम सुशोभित हैं; जहाँ पत्थर से भी अमृत चू पड़ता है; जहाँ भावना ज्ञान से मिली रहती है; वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित रहता है ।

(82)

Wherein sacred confluences of rivers look magnified; where nectar oozes from stones; where emotion is paired with intellect; that my Bhārata glows on the earth.



(८३)

अन्धकारात्प्रकाशं तथाज्ञानतो
ज्ञानमभ्येति मृत्योस्तथा चामृतम् ।
यत्र जीवः स्वरूपावबोधस्थितो
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८३)

जहाँ अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर लेने वाला जीव अँधेरे से प्रकाश की, अज्ञान से ज्ञान की तथा मृत्यु से अमृत की स्थिति प्राप्त कर लेता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित रहता है ।

(83)

Where soul, reposed in self-realisation, is led from darkness unto light, from ignorance unto knowledge and from death unto immortality, that my Bhārata glows on the earth.



(८४)

शासकानां मदं हेलयैव प्रजा
यत्र हन्ति प्रजातन्त्ररक्षापरा ।
त्यागिनो यत्र नैव म्रियन्ते क्वचिद्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८४)

जहाँ प्रजातन्त्र की रक्षा करने में तत्पर जनता शासकों के नशे को खेल-खेल में ही उतार देती है और जहाँ त्यागी व्यक्ति कभी नहीं मरते (यशःकाय से सदा जीवित रहते हैं) वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(84)

Where the people, engaged in safeguarding the democracy, deflate the swollen heads of the rulers in a trice and where the renouncers prove their immortality forever, that my Bhārata glows on the earth.



(८५)

यत्र नग्ना क्षुधार्ता अगेहा अपि
स्वाभिमानं जहत्येव नो मानवाः ।
यत्र दृप्तं निरीहस्तृणं मन्यते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८५)

जहाँ नंगे, भूखे तथा बेघर लोग भी स्वाभिमान को नहीं छोडते तथा जहाँ निरीह (किसी से कुछ न चाहने वाले) प्राणी घमण्डी को तिनके के बराबर समझते हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(85)

Where even naked, famished and houseless people do not give up their self-respect and where desireless persons count the conceited as nothing, that my Bhārata glows on the earth.



(८६)

शासनासन्दिकाराधनैकव्रतम्
नेतृवृन्दं समालोक्य छद्मावृतम् ।
यत्र नित्यं हसन्ति प्रजानां गणाः
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८६)

जहाँ केवल कुर्सीपरस्त तथा छलकपट से पूर्ण (राजनीतिक) नेताओं के समूह को देखकर प्रजा के समूह को नित्य हँसी आती है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(86)

Where the leaders dedicated only to ruling chair (not to public welfare) are rediculed by the people, that my Bhārata glows on the earth.



(८७)

यत्र नास्त्यङ्कुशो वाचि कस्यापि वै
यत्र नास्त्यङ्कुशो मानसे कस्यचित् ।
यत्र नास्त्यङ्कुशः कर्मणि क्वापि वै
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८७)

जहाँ किसी की वाणी पर कोई अंकुश नहीं है; जहाँ किसी के मन पर कोइ अंकुश नहीं है; जहाँ किसी के कर्म पर किसी का अंकुश नहीं है; वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(87)

Where speech (tongue), mind and action are unfettered, that my Bhārata glows on the earth.



(८८)

दुःखपूर्णं जगत्सौख्यपूर्णं भवेद्
यस्य रम्योपदेशैः सुधापूरितैः ।
जङ्गले मङ्गलं यच्च कर्तुं क्षमं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८८)

जिसके सुधापूरित रमणीय उपदेशों से दुःखपूर्ण कहा जाने वाला जगत् सुखपूर्ण बन सकता है और जो जंगल में मंगल करने में समर्थ है, ऐसा मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(88)

Whose charming and nectar-brimming sermons may convert the dolorous world into gay and mirthful universe and which can create a paradise in wilderness, that my Bhārata glows on the earth.



(८९)

आर्षवृन्देषु शान्तिप्रधानेषु वै
यत्र गूढं हि तेजः प्रदाहात्मकम् ।
साध्यते यत्र योगो मुदा साधकै-
र्भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(८९)

जहाँ के शान्तिप्रधान ऋषियों के समूहों में दाहात्मक तेज भी छिपा रहता है, एवं जहाँ साधक प्रसन्नतापूर्वक योग की साधना करते हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(89)

Wherein there lies concealed an energy with inherent power of burning in ascetics, in whom tranquility predominates, and where practisers perform Yoga happily, that my Bhārata glows on the earth.



(९०)

यस्य दिल्लीस्थिते पण्डितैर्मण्डिते
भव्यवाणीविहारे मुदा तन्यते ।
श्रीरमाकान्तशुक्लेन काव्यप्रभा
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(९०)

जिसके दिल्ली स्थित एवं विद्वानों से युक्त वाणी-विहार (मुहल्ले) में रमाकान्त शुक्ल मस्त होकर काव्यप्रभा का विस्तार करता है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(90)

Wherein Ramakant Shukla, sitting in the magnificant Vāṇī-Vihāra, the congregation of talents and situated in Delhi, composes poetry mirthfully, that my Bhārata glows on the earth.



(९१)

मोदमानैः क्वचिद् बर्धमानैः क्वचिद्
वन्द्यमानैः क्वचिच्छोच्यमानैः क्वचित् ।
बाध्यमानैर्नरैः क्वापि सम्पूरितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(९१)

जिसमें कुछ व्यक्तियों की प्रसन्नता और बढ़ोत्तरी हो रही है, कुछ की वन्दना की जा रही है, कुछ शोचनीय दशा में पड़े हैं तथा कुछ बाधाओं से घिरे हैं – ऐसा मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(91)

Where some are happy, some are prospering, some are saluted, some are being worshipped, some are in critical condition and some are aggrieved (even then), my Bhārata glows on the earth.



(९२)

चीयमानैः क्वचिद् वर्धमानैः क्वचित्
सेच्यमानैः क्वचित्पाल्यमानैः क्वचित् ।
छेद्यमानैः क्वचित्पादपैः शोभितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(९२)

जो कहीं क्षीण होते हुए, कहीं बढ़ते हुए, कहीं सींचे जाते हुए, कहीं पाले जाते हुए और कहीं काटे जाते हुए पादपों से शोभित हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सदा चमकता रहता है।

(92)

Congested with the trees, some thin, some verdant and growing, some irrigated, some nurtured, and some mutilated, my Bhārata glows on the earth.



(९३)

जन्मजातैः क्वचित् कर्मजातैः क्वचिद्
दण्ड्यमानैः क्वचिन्मण्ड्यमानैः क्वचित् ।
नेतृवर्गैः समाकीर्णमत्यद्भुतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(९३)

जो कहीं जन्म से और कहीं कर्मों से बने हुए, कहीं दण्डित किये जाते हुए और कहीं (माल्यार्पण आदि से) सजाये जाते हुए नेताओं के वर्गों से युक्त है तथा जो अत्यन्त अद्भुत है, वह मेरा भारत भूतल पर अनवरत सुशोभित हो रहा है।

(93)

Which is crowded with leaders amidst whom some are born great, some achieve recognition through their deeds, some have leadership thrust upon them and some are punished, that my wonderous Bhārata glows on the earth.



(९४)

बुद्‌बुदाभा नृपा यत्र याता लयं
यत्र विद्वान् कविश्चामरो राजते ।
यत्र चेष्टं यशो नैव देहप्रभा
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(९४)

जहाँ पानी के बुलबुले के समान राजागण विलीन हो गये; जहाँ विद्वान् और कवि अमर होकर शोभा पाते हैं और जहाँ शरीर की कान्ति से यश अधिक प्यारा माना गया है; वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित है ।

(94)

Where bubble-like many kings have disappeared but the scholars and poets are enjoying eternity (through their glorious works), where the glow of fame is prefered to the lustre of body, that my Bhārata glows on the earth.



(९५)

यस्य कीर्ति प्रतिष्ठां च शोभां मुदा
　　　　गायति क्रान्तदर्शी कवीनां चयः ।
यस्य वाणी-विहारोऽतुलो राजते
　　　　भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(९५)

क्रान्तदर्शी कवियों का समूह जिसकी कीर्ति, प्रतिष्ठा एवं शोभा का प्रसन्नतापूर्वक गान करता है और जिसके वाणी-विहार की जगत् में कोई तुलना नहीं है वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(95)

Whose fame, grandeur and beauty are sung by the poets gifted with preternatural vision and whose Vāṇi-Vihāra (pastime of learning) is unparalleled, that my Bhārata glows on the earth.



(९६)

यस्य वात्सल्यभावप्रपूर्णं शुभं
दिव्यमुत्सङ्गमाश्रित्य वैदेशिकैः ।
शान्तिराध्यात्मिकी निर्भयैः पीयते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।।

(९६)

जिसकी वात्सल्यभावपूर्ण, कल्याणकारी और दिव्य गोद में बैठकर वैदेशिक निर्भय होकर आध्यात्मिक शान्ति (की सुधा) का पान करते हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(96)

Taking shelter in whose devine and affectionate lap, the foreigners fearlessly attain the spiritual tranquility, that my Bhārata glows on the earth.



(९७)

यस्य तिष्ठन्ति गेया अनेके गुणाः
यस्य तिष्ठन्ति गेया अनेकाः क्रियाः ।
अस्ति यस्मिन्ननेकत्व एकस्थिति-
र्भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(९७)

जिसके (अभी भी) अनेक गुण गाने के लिए अवशिष्ट हैं, जिसकी अनेक क्रियाएँ (अभी भी) गाने के लिए अवशिष्ट हैं तथा जिसमें अनेकता में एकता व्याप्त है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(97)

Despite eulogising whose innumerable attributes in divergent ways, many qualities still remain unrevealed, many excellences remain untold and where unity is witnessed in diversity, that my Bhārata glows on the earth.



(६८)

मामकीना गिरः शक्तिमत्योऽपि नो
वर्णनं पूर्णतो यस्य कर्तुं क्षमाः ।
वर्णनातीतमेवानुभूयेत यद्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(६८)

मेरी शक्तिशाली वाणी भी जिसका पूर्णरूप से वर्णन करने में अपने को असमर्थ अनुभव करती है एवं जो वर्णनातीत और अनुभवैकगम्य है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(98)

My words, though powerful, cannot sing whose perfect beauty, which is indescribable and is the subject of realisation only, that my Bhārata glows on the earth.



(९९)

यस्य गेहेषु सत्यः स्त्रियः प्रत्यहं
दीपमुज्ज्वाल्य नीराजनं कुर्वते ।
स्वीयभक्त्या तथा तोषयन्ति प्रभुं
भूतले भाति तन्माकं भारतम् ।।

(९९)

जिसके घरों में सती स्त्रियाँ प्रतिदिन दीपक जलाकर भगवान् की आरती करती हैं, तथा अपनी भक्ति से प्रभु को सन्तुष्ट रखती हैं, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है ।

(99)

Wherein virtuous ladies perform Ārati daily by lighting lamp (Dīpaka) and please the Almighty with their devotion, that my Bhārata glows on the earth.



(१००)

प्रस्तरे शङ्करं मृत्तिकालोष्टके
विघ्नराजं गणेशं हृदा भावयत् ।
जीवनं कष्टजुष्टं मुदा यापयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१००)

जो अपने मन से पत्थर में शंकर भगवान् की एवं मिट्टी के ढेले में विघ्नराज गणेश की भावना कर लेता है और कष्टों से परिपूर्ण जीवन को मस्ती से काट लेता है, ऐसा मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है।

(100)

Visualising Lord Śankara in stone and Vighneśvara Gaṇeśa in clod and cheerfully passing the sorrow-packed life, my Bhārata ever glows on the earth.



(१०१)

यत्र देशान्तरं प्रस्थिते वल्लभे
ऊर्मिलेव व्यथापूरिता भामिनी।
विप्रलम्भाम्बुधि सश्रमं पारयेत्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(१०१)

जहाँ पति के परदेश चले जाने पर उर्मिला के समान व्यथा से भरी हुई प्रोषितपतिका विरह के समुद्र को परिश्रम के साथ पार कर जाती है, वह मेरा भारत भूतल पर सुशोभित हो रहा है।

(101)

Wherein Proṣitapatịkā (woman whose husband is away) languishing but absorbed in hard work like Urmilā (the wife of Lakṣmaṇa) could cross over the ocean of the agony of separation, that my Bhārata glows on the earth.



(१०२)

वञ्चकैस्तस्करैर्भञ्जकैः स्वार्थिभि-
र्वञ्चितं लुञ्चितं खण्डितं दण्डितम् ।
किन्तु नैजैरमेयैर्बलैर्वर्द्धितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।

(१०२)

ठगों के द्वारा ठगा जाने पर, तस्करों के द्वारा खसोटा जाने पर, घरफोड़ों के द्वारा खण्डित किया जाने पर तथा स्वार्थियों के द्वारा दण्डित किया जाने पर भी जो अपनी अपरिमित शक्ति से फलता-फूलता रहा है, वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(*102*)

Though deceived, exploited, devided and punished by the imposters, smugglers, intriguers and vested interests yet prospering with its own unlimited power, my Bhārata ever glows on the earth.



(१०३)

जीवदास्ते न जानामि कस्माद्युगात्
साम्प्रतं निर्धनत्वेऽपि सञ्जीवति ।
मृत्युहीनं जराहीनमाशान्वितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१०३)

न जाने, यह किस युग से जी रहा है, और यह गरीबी में भी भली प्रकार जीता है। यह मृत्युहीन है; इसे बुढ़ापा नहीं व्यापता; यह आशान्वित है। मेरा भारत भूतल पर सदा चमकता रहता है।

(103)

From what immemorial times it holds its breath is not known to me; even today it lives despite its poverty. Unconquered by death or senility, my evergreen Bhārata ever glows on the earth.



(१०४)

तिष्ठतोत्तिष्ठता गच्छता क्रीडता
कुर्वतानेककर्माणि स्वे जीवने ।
गीयतां गीयतां सप्रमोदं मया
'भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्' ॥

(१०४)

उठते हुए, बैठते हुए, चलते हुए, खेलते हुए तथा अपने जीवन में अनेक काम करते हुए मेरे द्वारा सप्रमोद यही गाया जाता रहे कि मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित रहता है ।

(104)

While sitting, standing, walking, playing and performing various duties in my life, let me sing mirthfully again and again, "My Bhārata ever glows on the earth."



(१०५)

कुत्र सीमातिगा अस्य दिव्या गुणाः ?
कुत्र सीमागतः शब्दराशिश्च मे ?
पारयेऽहं न हीतः परं भाषितुं,
'भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।'

(१०५)

कहाँ तो इसके निःसीम दिव्य गुण और कहाँ मेरी सीमित शब्दराशि ? मुझ से तो इससे अधिक कुछ कहते नहीं बन पड़ता कि 'मेरा भारत भूतल पर सदा शोभित रहता है।'

(105)

On one hand are its limitless divine qualities and on the other hand, is my limited vocabulary. I cannot say more than this "My Bhārata ever glows on the earth."



(१०६)

निर्बलं निर्धनं कैश्चिदुक्तं सद-
प्यस्ति यत्स्वाभिमानेन पूर्णं सदा ।
इन्दिराशारदासाधनामन्दिरम्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥

(१०६)

कुछ लोगों के द्वारा 'निर्बल' तथा 'निर्धन' कहा जाने पर भी जो सदा स्वाभिमान से परिपूर्ण है तथा जो (लक्ष्मी) और (सरस्वती) का साधना-मन्दिर है वह मेरा भारत भूतल पर सदा सुशोभित है ।

(106)

Though propagated as feeble and famished by some persons yet which is full of self-respect and is the worship-temple of Indirā (Lakṣmī) and Śāradā (Sarasvatī) that my Bhārata ever glows on the earth.



(१०७)

सन्तु दोषा अनेकेऽत्र केश्चिन्मताः
किन्तु नाहं प्रपश्यामि तान् मन्दधीः।
वन्दनीयं मया, कीर्तनीयं मया
मोदताम्, वर्धताम्, राजताम् भारतम् ॥

(१०७)

बेशक इसमें कुछ (चतुर) लोगों के विचार से (गरीबी, बेरोजगारी, अन्धविश्वास, पिछड़ापन आदि) अनेक दोष विद्यमान हों किन्तु मैं उन्हें देख ही नहीं पाता, यदि इसके लिए लोग मुझे मन्दबुद्धि कहते हैं तो कहें, इसकी मुझे चिन्ता नहीं। मैं तो अपने भारत की वन्दना करता रहूँगा और इसकी कीर्ति का गान करता रहूँगा। मेरा भारत प्रसन्न रहे ! मेरा भारत फले-फूले ! मेरा भारत शोभा प्राप्त करता रहे !

(107)

Let there be many flaws here in somebody's opinion but being dullwitted I cannot see them. It is to be worshipped by me; It is to be sung by me. May my Bhārata be happy ! May it prosper ! May it be glorified !



(१०८)

शोषितो नात्र कश्चिद्भवेत्केनचित्
व्याधिना पीडितो नो भवेत्कश्चन ।
नात्र कोऽपि व्रजेद्दीनतां हीनतां
मोदतां मे सदा पावनं भारतम् ॥

(१०८)

यहाँ कोई किसी का शोषण न करे; यहाँ कोई भी रोग से पीड़ित न हो; यहाँ कोई भी दीन और हीन न रहे; मेरा पवित्र भारत सदा प्रसन्न रहे !

(108)

Let nobody be exploited by anybody here; let nobody suffer from deseases here; let nobody be humiliated here; let nobody feel inferiority here. May my pious Bhārata be happy and gay !



भाति मे भारतम्

(समीक्षा)

(डॉ० रमेशचन्द्रशुक्लः, एम०ए०, पीएच० डी०, साहित्याचार्यः, सांख्ययोगाचार्य, अलीगढ़स्थश्रीवार्ष्णेयकालेजसंस्कृत-विभागभूतपूर्वाचार्यः 'देववाणी-परिषद्, दिल्ली'-संस्थापकाध्यक्षः,)

अस्मदभिवन्दनीय एष भारतीयसंस्कृतसुधीसमाज एतस्मिन् आधुनिकेऽनेहसि राष्ट्रभक्तेः समुद्भावने, तस्याः परिवर्धने, सञ्चारणे, प्रसारणे, समुत्थापने च यत् समृद्धं समर्थं प्रेरणाप्रदं प्रभावपेशलं साहित्यमद्यपर्यन्तमसृजत् तस्मिन् लोकमान्यतिलक-पण्डितमदनमोहनमालवीय-महात्मगान्धि - पण्डितजवाहरलालनेहरु-श्रीमतीन्दिरागान्धिप्रभृतिपरकराष्ट्रियकाव्यमहाकाव्यान्येवावश्यं पर्याप्तसंख्यायां दृष्टान्यभवन् परं राष्ट्रप्रेमपरिपोषणरतं मातृभूभक्तं परमप्रभावशालिन्यां भाषायां विरचितं नितान्तमनोरमौजस्विशब्देषु सुग्रथितं समुच्छलत्प्रवाहमञ्जुलायां शैल्यां विनिवेशितमुत्साहप्रदनवजीवनसञ्चारणकुशलार्यावल्यां विकसितं **'भाति मे भारतम्'** नाम भारतस्तोत्रकाव्यं डॉ० रमाकान्तशुक्ल-प्रणीतमिदमेव मम दृग्गोचरतां गतमस्ति।

संसारे शोभमानानां सर्वेषामपि राष्ट्राणां भाषासु यद्यपि काव्यानि शोभन्ते परं भारतस्य संस्कृतभाषायां भासमानानां काव्यानां स्वकीयमेवाद्वितीयं परमप्रकर्षश्रिया दीप्यमानं किमप्यनिर्वचनीयं वैशिष्ट्यं विद्योतते।

संस्कृतकाव्यमन्दाकिनी तादृश्यां तां शक्तिमात्मनि सन्निवेशयति याध्येतुः श्रोतुश्च मनसो मलिनतां परिमार्ज्य तत्र पावनतां सञ्चारयन्ती प्रज्ञाया उत्कर्षं समुत्थापयन्त्यात्मनि परब्रह्मप्रकाशं वितनुते। अतएव तत्त्वज्ञाः सर्वास्वपि कलासु

काव्यकलामुत्कृष्टतमां मन्यन्ते। इयं काव्यकलैव, या ताम-सानपि जनान् सत्कर्तव्योन्मुखान् विदधत्यत एव तु प्रोक्तम्–

'व्यामोहयन्ती विविधैर्वचोभिर्व्यावर्तयत्यन्यकलासु दृष्टिम्।
कालं महान्तं क्षणवन्नयन्ती कान्तेव दक्षा कविता धिनोति ॥'

(महाकविनीलकण्ठदीक्षितः, शि०ली०म० १।२४)

काव्यं धर्म-देश-समाज-राजनीति-शिल्पकला-भक्ति-योग-देशप्रेमादिसर्वविषयान् सरसतया प्रकाशयितुं क्षमते, अत एव नाट्यशास्त्रे तल्लक्ष्यीकृत्याभिहितम्—

'न तच्छास्त्रं न सा विद्या न तच्छिल्पं न ताः कलाः।
नासौ योगो न तज्ज्ञानं नाटके यन्न दृश्यते'॥

कविर्यो यावतीमेव कवित्वशक्तिं बिभर्ति तस्य काव्य-मपि वर्णनीयं वस्तु तावतैव प्रकृष्टेनौजसा निधातुं प्रभवति। सफलः कविर्येन भावेन भावितो भूत्वा स्वकीयं वर्णनीयं वस्तु गायति, श्रोताध्येता वा तस्मिन्नेव भावे भावितो भवन् कविना सहैकात्म्यमश्नुते। तस्यां स्थित्यां सः कविहृदयगत-सकलार्थाननायासेनैवावगन्तुं समर्थः सञ्जायते।

इदं हि **'भाति मे भारतम्'** स्तोत्रकाव्यमपि काव्य-त्वश्रिया विद्योत्यमानमवाप्यते। काव्यनिकषे कृत्स्नतया शुद्धं काव्यत्वं हि तस्य सिद्ध्यति। काव्यस्योत्कृष्टतममुद्देश्य-मिदमपि चरितार्थीकुर्वदधिगम्यते। काव्यस्य महनीयं कार्य-मिदं यददः स्वकीयैः कतिपयैरेव पदैरस्मन्मानसं विषयान्त-रादाकृष्य तत्र समावेशयेत् यस्मिन् समावेशनं तस्या-भिमतं वर्तते। इदं काव्यं प्रारम्भादेव महनीयं कार्यमिदं विदधद् विलोक्यते। तद्—

विश्वबन्धुत्वमुद्घोषयत् पावनं
विश्ववन्द्यैश्चरित्रैर्जगत्पावयत्
विश्वमेकं कुटुम्बं समालोकयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥ (१)

इत्येतत्परमबन्धुरपदमधुरिम्णा गायदध्येतुः श्रोतुर्वा स्वान्तं स्वकीयस्य राष्ट्रस्य भारतस्य श्लाघनीयां महत्तां प्रति आवर्जयत् प्राप्यते।

यं राष्ट्रं मानवा अपि दानवा अपि सज्जनाः अपि असज्जनाः अपि, धनवन्तोऽपि दारिद्र्यवन्तोऽपि, बलवन्तोऽपि नैर्बल्यवन्तोऽपि, देवा अपि योगिनोऽपि भोगिनश्चापि समुपासते स राष्ट्रो यदि भूतले भाति तदा भूतलेन किन्न नाम सुकृतं सौभाग्यञ्चाधिगतमित्यभिदधत् कविः स्वस्य देशस्य गरिमाणं परमविदग्धतयाभिव्यञ्जयन्—

मानवैर्दानवैस्सज्जनैर्दुर्जनै-
स्सधनैर्निर्धनैस्सदबलैर्निर्बलैः ।
निर्जरैर्योगिभिर्भोगिभिश्चार्थितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।। (४)

इत्येतस्यां सरलतासुशोभितायां पदावल्यां युगपदेव कार्यद्वयमनुतिष्ठति, तत्र प्रथमं देशस्य विचित्रविशिष्टताशालित्वं, द्वितीयञ्च तद्दिशायां सर्वेषामपि हृदयावर्जनम् । यत्र वैचित्र्यं विभाति तत् कं नाकर्षति ?

काव्यकलायां तु सा शक्तिर्या तं सर्वं विषयं, योऽपि तस्याः पुरः समुपस्थितो जायते, सफलतया वर्णयितुं शक्नोति; कामं सः कोऽपि विषयः स्यात् । अत्रेदं काव्यं प्रत्यक्षमेव रम्यं निदर्शनम् । काव्यस्यास्य ध्येयं वर्तते—'राष्ट्रप्रेम' । इमं हि वर्णनीयं विषयं कियता चारुतार्चितेन प्रकारेण कविरगायदित्येतदवलोक्यास्मदीयमुपर्युक्तं कथनं स्पष्टतया सत्यं सिद्ध्यति ।

राष्ट्रियं काव्यं तु तद् वस्तुतो यद् राष्ट्रस्य स्वरूपं राष्ट्रस्यात्मानं, राष्ट्रस्य भावनामस्माकं समक्षे निधातुं प्रभवेत् । इदं राष्ट्रिय-काव्यं कार्यमेतद् हृदयाभिरामया रीत्यानुतिष्ठदासाद्यते—

यत्प्रजातन्त्ररक्षापरर्मानवै-
र्नास्ति हीनं कदापि प्रभाभासुरम् ।
आत्मतेजोमय तद्धयहिंसामयं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।। (७६)
रक्तपातं विना शस्त्रपातं विना
यत्र संक्रान्तिरायाति मन्दस्मिता ।

येन विश्वं सदा शिक्ष्यते प्रेयंते
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ।। (७४)
यत्र सर्वंसहा मेदिनी राजते
यत्र शीलं परं भूषणं भण्यते ।
यत्र मौनं चकास्ति व्रतेषूत्तमं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्' ।। (७७)

इत्येते श्लोका अस्मद्राष्ट्रस्य प्रजातन्त्रानुरागिताम्, अहिंसाव्रतपरायणताम्, आत्मतेजोऽर्जनोन्मुखतां निधाय, युद्धेऽहिंसाशस्त्रप्रयोगप्रतिष्ठापनं चास्य राष्ट्रस्यास्मिन् युगे स्वकीयमेव कौशलमिति विज्ञाप्य 'शीलं परं भूषणम्' इत्येतामस्य राष्ट्रस्य मान्यतामाकलयन्ति ।

काव्यं तु तद् यस्मिन् देशस्य वर्तमानदशापि चित्रिता भवेत् । काव्यमिदमीदृशमेव—

'सज्जनान् दुर्गतान् दुर्जनान् सद्गतान्
मानिता वारनारीर्विपन्ना वधूः ।
वीक्ष्य चित्तं कवेर्दूयते यत्र तद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।। (७८)
दुःखदावानलैर्दग्धदेहान्नरान्
क्षुत्पिपासाकुलान् वृत्तिकष्टार्दितान् ।
वीक्ष्य कारुण्यपूर्णा नरा यत्र तद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।। (७९)

कवेः प्रतिभायाः वाचाश्वासःयुल्लेखनीयं सौन्दर्यं यदसौ यल्लक्ष्यत्वेन वृणुते तत् स्वपाठकस्याग्रे प्रत्यक्षीकृत्य प्रतिष्ठापयति । सः तस्मिन् भावे स्वकीयं श्रोतारं वाध्येतारं निमज्जयति । सोऽपि तद्भावभावितमना भवति ।

कोमलमतीनामपि स्वराष्ट्रस्य धर्मे, स्वदेशस्य प्रेम्णि, स्वदेशीयपदार्थाचरोचवर्धरिण्यां प्रतिष्ठापनं काव्यस्यास्ति चरमोद्देश्यं; काव्यमेतत् स्वचरमोद्देश्यस्यासादने, मन्मतौ, भृशं सफलतामधियाति ।

राष्ट्रभक्तिरपि वस्तुत इह काव्ये भावभुव उत्प्लुत्य रसभुवं गतास्ति । को जनो हि स यः काव्यस्य श्लोकान् श्रुत्वा-

धीत्य वा तमानन्दं न विन्दति य आनन्दः श्रुतौ साहित्ये च रस इति गीयते।

साहित्यशास्त्रविदः कविकर्मभूतं काव्यं द्विविधमिति वदन्ति। तदेवम्—१ रसकाव्यम्। २ भावकाव्यम्। लोकं प्रधानीकृत्य कृता रचना 'रसकाव्य' मिति निगद्यते। देव-स्वामि-नृप-देशा-दिविषयान् लक्ष्यीकृत्य रचना 'भावकाव्यम्' इति कथ्यते। प्रकृतेऽस्मिन् काव्ये देशभक्तिरुपश्लोकितास्ति तस्मात् काव्यमिदं भावकाव्यान्तर्गतं वर्तते।

भक्तिपरका भावाः स्तोत्रे निधीयन्ते। स्तोत्राध्वैवैक ईदृग् यत्र भक्तिपरकभावना प्रीयते। अतो मनीषिणः कवय ईश्वर-गुरु-स्वामिप्रभृतिपूज्यानां गुणान् स्तोत्रकाव्ये गायन्ति। काव्यमिदं स्वकीयस्य राष्ट्रस्य गुणान् वैशिष्ट्यञ्च तत्सादरं श्रद्धया च सह समुपस्थापयति, तस्मात्कारणात् काव्यस्यास्यान्तर्भावः स्तोत्रकाव्येषु जातोऽस्ति।

स्तोत्रेण स्तूयमानस्य स्वरूपं परिचीयते। चेतोऽव-स्थितिः सञ्जायते स्वरूपमभिज्ञायैव। गुणैः स्वरूपे निरूपिते सम्यक् परिचयोऽभीष्टस्य जायते; तेन च सुखं विन्दति चेतः। तत्र तत् ततो निलीयते। तदनुगुणतया कुमार्गाद् विषयान्तरेभ्यो मनो निवर्तते। तत्र तत्रैवाराजति। तस्मा-द्धेतोः स्तोत्रस्यास्ति महन्महत्त्वम्।

कविरयं 'केनप्रकारेण मानवस्य मनः स्वाभीष्टां दिशां प्रति आवर्जयितुं शक्यं येन तद् आवर्जितं भूत्वा तत्र निलीयेत' इति साधु समीचीनतया वेत्ति। अत एव तेन स्वकीयो देशः स्तोत्रपद्धत्यामुपश्लोकितः। उपश्लोकने तथा सोऽयतत यथा देशस्य स्वरूपं, तदीया गुणास्तदीया संस्कृतिस्तदीया आचाराश्च पावनाः प्रत्यक्षतया दृष्टा भवेयुः। तद्दर्शनं प्राप्य मनसस्तद्गतगुणेष्वासक्तिरनायासेनैव भवितुं शक्या। इदं हि गुरुतरं कार्यं काव्यमेतत् साधयति अतो-ऽस्तीदं नूनमेव प्रशस्ततरं स्तोत्रकाव्यम्।

कस्यचन वर्णनीयस्य वस्तुनः कापि विशिष्टता यत्र काव्ये एकस्मिन्नेव श्लोके पूर्णतया चित्रिता जायते तदा तत्

काव्यं मुक्तकत्वस्य रूपं बिभर्ति। एतस्मिन् काव्ये ये श्लोकाः शोभन्ते तेष्वेकैकः श्लोको वर्ण्यं वैशिष्ट्यं कृत्स्नतयास्माकं समक्षे निदधात्यतः काव्यस्यास्य रूपं मुक्तकं रूपं वर्तते। एतदर्थमिह श्लोक एक निधीयते—

'गोखलेबालगङ्गाधराराधितं
श्रीशिवाजीतुकारामसम्बोधितम्।
यन्महाराष्ट्रकं सह यश्शृङ्गोच्छ्रितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥ (५२)

महाराष्ट्रप्रदेशस्य वर्णनं कवेरिष्टं यत्तच्छ्लोकेनैकेनैव पूर्णतयास्मत्समक्षे निधीयत इत्येतद्वयं स्फुटतया प्रेक्षामहे।

स एव कविः स्वभावानुरूपं समाजं कर्तुं प्रभवति यः स्वकाव्ये निहितेषु भावेषु सर्वाङ्गीणतया स्निह्यति; यः स्वाभिमतेषु भावेषु प्रीयते, यः स्वकीयेषु भावेषु विशुद्धं छलरहितं पावनं निःस्वार्थं प्रेम निदधाति। अस्मिन् काव्ये राष्ट्रभक्तिभावो गृहीतोऽस्ति। कविस्तस्य भावस्य मनसा, वाचा कर्मणा चाराधकोऽस्ति; सोऽस्ति परमार्थतो देशभक्तः। इदं हि तदीयेनैतेन काव्येन तु सिद्ध्यत्येव। परमिह तेन समर्पणपरकौ श्लोकौ द्वौ रचितौ स्तः, ताविह प्रस्तुतीक्रियेते। ताभ्याञ्च तस्य देशभक्तत्वमस्माकं पुरः समुपस्थितं जायते—

भारतं वर्तते मे परं सम्बलं,
भारतं नित्यमेव स्मरामि प्रियम्।
भारतेनास्ति मे जीवनं जीवनं,
भारतायार्पितं मेऽखिलं चेष्टितम्॥
भारताद्भाति मे भूतलं भूतलं,
भारतस्य प्रतिष्ठास्ति मे मानसे।
भारतेऽहं प्रपश्यामि विश्वेश्वरं,
भारत! क्षोणिशृङ्गार! तुभ्यं नमः॥

अत्र काव्ये प्रचलिताङ्गलशब्दानामपिप्रयोगो दृश्यते। (श्लोक १६) प्रायोऽत्र स्रग्विणीवृत्तं वर्तते। वस्तुनो वर्णनं यथावदतः स्वभावोक्तिरलङ्कारो मुख्यः। काव्यमुद्दिश्यान्यदपि वक्तुवमशिष्यते परं केवलमिदमुक्त्वा विरम्यते। ✲ ✲

'भाति मे भारतम्' : काव्यदर्शनम्

[डा० शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदः एम०ए०, पीएच०डी०, साहित्याचार्यः
प्रवक्ता, साहित्य-विभागः, प्राच्यविद्याधर्मविज्ञानसंकायः,
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी]

भारतकविसहृदयसमाजे नवीनां संस्फूर्तिं सम्प्रसारयत् "भाति मे भारतम्" काव्यं धुर्यकवेः श्रीरमाकान्तशुक्लमहाभागस्यावर्जयतितरां सचेतसां चेतः। "एकस्य तिष्ठति कवेर्गृह एव काव्यम्" इत्यवधूयाभाणकमिदं काव्यमद्य संस्कृतकविसम्मेलनश्रोतृसहृदयगृहेषु, बालेषु बालासु, नारीषु नरेषु, वृद्धेषु सिद्धेषु सङ्गीतलहरीं विलासयति समर्पयति च प्रेरणापूरितं निर्मलमानन्दममन्दम्।

"तया कवितया किं वा किं वा वनितया तया
पदविन्यासमात्रेण न घूर्णयति यच्छिरः"

इति सत्यस्पष्टा कविता-प्रभावानुभवधोरणी सम्पूर्यतेऽद्य नितरां "भाति मे भारतम्" संज्ञास्पदेन गीतिकाव्यरत्नगुम्फेन। गीतिकाव्यरत्नमालाया एतस्या प्रभादीप्त्या प्रत्येकपदविन्याससमकालमेव सहृदयशिरोघूर्णनं सहस्रशो जनानां दृष्टचरमनेकत्र विशिष्टेषु निखिलभारतीय-संस्कृतकविसम्मेलनेषु। विगतवर्षे वाराणस्यां संजाते विश्वसंस्कृतसम्मेलनाङ्गभूते[1] विशिष्टे संस्कृतकविसम्मेलने, विद्वत्प्रकाण्डकविपरिषन्मध्ये संश्रावितमिदं काव्यं श्रीरमाकान्तशुक्लमेव यत्र तत्र सर्वत्र चर्चितं कृतवत्।

संस्कृतभाषाऽद्य सर्वसाधारणाद् दूरे जातेति न तिरोहितम्, संस्कृतकविताऽपि च तादृशमेव स्थानं सर्वसाधारणे धारयति, परं यदा

---

१. विश्वसंस्कृतसम्मेलनम् २१ अक्टूबरतः २६ अक्टूबरपर्यन्तम् काशी-हिन्दू विश्वविद्यालये ई० १९८१ सत्रे नियोजितं वाराणस्याम्।

सर्वविधाऽवर्जनगुणगौरवसमन्वितः श्रीरमाकान्तशुक्लसदृशः कविर्मञ्चे "भाति मे भारतम्" सदृशं काव्यमादाय समायाति तदा तावत्कालपर्यन्तं तूपर्युक्तं धारणाद्वयमपि दूरं प्रयातीति नैकशो निभालितम्। देशेऽस्मिन् अनेकदशवारं काव्यस्यास्य पाठः सञ्जातः, सहस्रशश्च सहृदयाः श्रोतारो भारतप्रेरणाप्रपूरितस्वान्ता अपि नूतनां भक्तिधारां स्वान्ते धारितवन्तस्तदिदं श्रुत्वेति न न्यूनं साफल्यं सत्कवेरस्य श्रीमतो डॉ० रमाकान्तशुक्लमहाभागस्य।

सर्वपुरातनसभ्यताशोभासमुच्छालितमिदं भारतं वेदच्छन्दस्सु प्रगीतम्, रामायणे वर्णितम्, महाभारते चित्रितम्, पुराणेषु चर्चितमद्यावधि चानेकसहस्रनानाभाषाप्रवीणकविवृन्दवर्णनसम्पूजितं कां वा वर्णनशोभां नाङ्गीचकार! भारतवर्णनपराः सर्वेऽपि विविधाः सन्दर्भा यदि संकलिताः स्युस्तर्हि नैकग्रन्थ (जिल्द)-प्रपूरणं जायेत। को वा भवेत् तादृशो लब्धवाग्देवीप्रसादः कविर्येन स्ववाक्पुष्पैर्भारतं न प्रपूजितं स्यात्। केचित् कथाप्रवाहप्रसङ्गेषु भारतवर्णने मोदं लब्धवन्तोऽपरे स्वमनोऽनुकूलमहाकाव्यसंसारे संचरणशीला महाकवयः समुचितेऽवसरे भारतवर्णनाय समुत्सुकाः सञ्जायन्ते। कैश्चिन्मुक्तकमालाभिर्वर्णितं भारतमपरैः समस्यापूर्तिसन्दर्भे चर्चितम्, येनाऽपि यत्रावसरो लब्धः स्यात्सुकविना तेन तत्रैव स्वप्रियतमं भारतं शब्दचित्रेऽवतारितमिति सर्वत्रावलोकयितुं सुकरम्।

अद्य श्रीरमाकान्तशुक्लमहोदय इव निकटपूर्वमप्यनेके विश्वविश्रुता महाकवयो विद्वांसश्च केवलं भारतवर्णनमेवोद्देश्यीकृत्य काव्यानि सिद्धप्रसिद्धानि नानाभाषासु संस्कृतेऽपि च निर्मितवन्तो येषु हिन्दीभाषायां राष्ट्रकवेः श्रीमैथिलीशरणगुप्तस्य "भारत-भारती" संस्कृते च कवितार्किकचक्रवर्तिनां श्रीमहादेवशास्त्रिणां "भारतशतकम्" स्वान्तं नितान्तं सन्तोषयति। तादृशे विपुलतरेऽस्मिन् भारतवर्णनसन्दर्भे श्रीरमाकान्तशुक्लस्य कृतिरियमद्भुतामनन्यसाधा-

रणीं दीप्तिभावहतीति किमेतन्नास्त्यनन्यसामान्यं साफल्यं कविवरेण्यस्यास्य ।

स्रग्विणीति गीतिमयेन छन्दसाऽरचितमिदं "भाति मे भारतम्" गीतिकाव्यं स्वीयसंज्ञाघटकीभूतेन "मे" इति शब्देन न केवलं कविमेव निर्दिशत्यपितु सर्वानपि पाठकान् श्रोतृबृन्दांश्चात्रान्तर्भावयत् साधारणीकरणव्यापारस्य नाम्न्येव प्रादुर्भावं सूचयति । भारतं सर्वेषामपि विद्यते निवासिनां भक्तिभाजां च, तं प्रति सर्वेऽपि—"मे भारतमिति" वदेयुः । तामेव सार्वजनीनां भावनां कविरपि संज्ञयाऽनया प्रकाशयति तामेव च विश्वजनीनां भावनां प्रारम्भिकेऽपि पद्यद्वये सुप्रसन्नां प्रकाशयन् कविर्वदति—

भारतं वर्तते मे परं सम्बलं
भारतं नित्यमेव स्मरामि प्रियम् ।
भारतेनास्ति मे जीवनं जीवनं
भारतायार्पितं मेऽखिलं चेष्टितम् ॥
भारताद् भाति मे भूतलं भूतलं
भारतस्य प्रतिष्ठास्ति मे मानसे ।
भारतेऽहं प्रपश्यामि विश्वेश्वरं
भारत ! क्षोणिशृङ्गार तुभ्यं नमः ॥

गीतकाव्यस्यास्यावलोकनेन भारतस्य न केवलं भौतिकं रूपं मानसे समुल्लसत्यपितु सर्वविधालौकिकचमत्कारचारु किमप्यलौकिकं रूपं कविराविष्करोति, तत्र भौगोलिकं रूपं नितान्तमेकदेशभूतमास्ते भौतिकं स्वरूपं यद्यपि राष्ट्रस्य मूलतत्त्वरूपेण स्थितं भवति तद् विना राष्ट्रभावनाया भक्तेरेव चाऽधारविरहितत्वात् परं भूगोलापेक्षया इतिहासदृष्ट्या यत्र नितरां पुरातनत्वं विद्योतते तत्र भौतिकसुषमया सहैव भावनाप्राधान्यं समुन्मेषमासादयति, तेन संस्कृतिः सभ्यता च पुष्पिता पल्लविता भवति, तद्भूगोलावलम्बिनि समाजे, भावना-

प्रधानतयैव च देशस्य स्वरूपं हृदये प्रेरणां संचारयति, न केवलं भौतिकेन रूपेण। अत एव प्रथम एव पद्ये भारतस्य विश्वविश्रुतं भावनाप्रधानं स्वरूपमाविष्कुर्वन् कविर्निगदति—

विश्वबन्धुत्वमुद्घोषयत्पावनं
विश्ववन्द्यैश्चरित्रैर्जगत्पावयत् ।
विश्वमेकं कुटुम्बं समालोकयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।१।।

अग्रिमेषु च पद्येष्वपि अहिंसादिप्रमुखभावनातत्त्वानां भारत-प्राणभूतानां शोभनं चित्रमुद्भासितं दृश्यते।

भारतभूमिः प्रकृतिदृष्ट्या सर्वशोभामयी विद्यते यस्यां स्वत एव काव्यानि विलसन्ति, तादृशीमनुपमां प्रकृतिसुषमामनेकैश्छन्दोभिः कविर्वर्णयति—

कोकिलैः कूजितं षट्पदैर्गुञ्जितं
केकिभिर्नृत्यपारङ्गतैर्नादितम् ।
सारिका-कीर-वादप्रवादैर्युतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।४०।।

मेघमालाकुलं विद्युदुद्द्योतकं
काशहासान्वितं सर्षपश्रीयुतम् ।
पक्वगोधूमसस्यैश्च सम्पूरितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।४२।।

श्यामलानोकहश्रीसमृद्धान्तरं
पद्मनेत्रैस्सरोभिस्समालोकितम् ।
निर्झरैः श्वेतफेनैस्समृद्धाञ्चलं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।४३।।

हंसकारण्डवैस्सारसैर्वर्तकैः
क्रौञ्चकाकैः पिकैः खञ्जरीटैः शुकैः ।
तित्तिरैष्टिट्टिभैः श्येनगृद्ध्रैश्चितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।।४४।।

नितरां गेयशब्दमालासमाहितानीमानि प्रकृतिचित्राणि सहज-सौन्दर्यसमर्पकाणि, सहृदयचेतसि सुगन्धं विस्तारयन्ति।

नदीनां (६, ३५), पर्वतानां (१०), तीर्थानां (२८-२६), पादपानां (६२) केरल-कश्मीर-प्रयाग-पूर्वाञ्चल-गुर्जर-वङ्ग-पञ्चनद-महाराष्ट्र-तमिल - मध्यप्रदेश - कर्नाटक-राजस्थान-आन्ध्र-नागालैण्ड-मालव-कुरुक्षेत्र-प्रभृतिप्रदेशानां (४६-५०) नितान्तं मनोमोहकानि चित्राणि गेयशब्दावल्यां "भाति मे भारतम्" काव्ये सुषमामनुपमा-मुल्लासयन्ति।

देशस्यास्य गौरवपूर्णं साहित्यं कस्य वा मनीषिणः समावर्जकं न भवति, यदाधारेणाद्यापि देशस्यास्य गुरुत्वमक्षुण्णं तिष्ठति। दार्श-निककाव्याध्यात्मचिन्तनरुचिरस्य तादृशस्यालौकिकस्य साहित्यभाण्डा-गारस्य गौरवगीतानि गायन् कविरयमनेकेषु छन्दस्सु तथा प्रस्तौति यथा पाठकश्रोतृणां मनांसि श्रद्धामयानि सञ्जायन्ते —

वेदभाभासितं सत्कलालासितं
रम्यसङ्गीतसाहित्यसौहित्यभूः
भारतीवल्लकीझङ्कृतं झङ्कृतं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥६॥

यत् त्रयीसांख्ययोगादिमार्गैर्युतं
जीवनं मुक्तमाकर्तुमाकांक्षति।
शीलसन्तोषसत्यादिभी रक्षितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥७॥

दर्शनज्ञानचारित्र्यसम्मेलनं
यत्र मोक्षस्य मार्गं भणन्त्यागमाः।
ज्ञानमास्ते च भारः क्रियां वै विना
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥८॥

मूलरामायणं पम्परामायणं
　　कम्बरामायणं जैनरामायणम् ।
कृत्तिवासादिरामायणं श्रावयद्
　　भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥२५॥

योगवासिष्ठगीतामहाभारतै-
　　र्ग्रन्थरत्नैश्च तैस्तैः प्रबुद्धं तथा ।
मानसं बीजकं सूरसिन्धुं दधद्
　　भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥२६॥

गद्यपद्याञ्जितं श्रव्यदृश्याञ्जितं
　　गीतनृत्याञ्जितं लोकवेदाञ्जितम् ।
सप्रसादं समाधुर्यमोजोऽन्वितं
　　भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥२७॥

वृत्तेष्वेतेषु दिङ्मात्रमपि व्यञ्जनयाऽवशिष्टानामुपरि शोभाविशेषं विनिक्षिपतीव ।

भारतस्य समादृतं वैशिष्ट्यमस्ति—

"यद्धि भिन्नं सदप्यस्त्यभिन्नं सदा" (५ श्लो०)

"अस्ति यस्मिन्ननेकत्व एकस्थितिः" (९७ श्लो०)

तादृशस्यैकत्वस्योपरि कविरयं न सामान्यतया सावधानोऽपितु तस्यैकत्वस्य विविधानि रूपाणि सविशेषमवतारयति (४, ४१, ४५, ४६, ९१) विविधभाषाणां (२३), पर्वणाम् (३२) समाजसम्मेलनानां (३०), प्राचीनजातीनां (४६) सम्यगालोचनं कुर्वन् विभिन्नत्वप्रदर्शनपुरस्सरं सर्वेषामेतेषां भारतान्तर्भूतत्वं तेन च भारतस्य विराट्स्वरूपमवतारयति ।

प्रायशो वर्णनप्रसङ्गेषु पारम्परिककवयः राष्ट्रस्य नवीनोपलब्धीनां विषय उपेक्षामेव धारयन्तो विलोक्यन्ते। परं साहित्यं समाजस्य प्रतिविम्बभूतं भवतीत्यद्यत्वे नवधारानिष्णाताः संस्कृतकवयो राष्ट्रस्य विज्ञानधारितां सर्वजनमनस्तोषणकरीमिमां नवसमुन्नतिं न तमामुपेक्षन्ते। "भाति मे भारतम्" काव्यस्य प्रणेता श्रीमान् रमाकान्तशुक्लमहाशयस्तु तत्र सविशेषं चमत्कृतिमुल्लासयति। नवीनोपलब्धिचित्रणमेतस्मिन् काव्ये तावदभूतपूर्वमेव, यथा—

भाखड़ाबन्ध-दामोदरीयोजना-
बाणगङ्गाफरक्कादिसिक्तोर्जितम्
ब्रह्मपुत्रादिसन्दर्शिताम्बुच्छटं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥११॥

विद्युदुत्पादने तैलसंशोधने
इन्धनान्वेषणे लौहनिष्पादने।
यन्त्रनिर्माणकार्ये च पूर्णक्षमं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥१२॥

रोगजालं चिकित्सालयस्थापनै-
रौषधोत्पादनैः शल्यशोधैस्तथा।
नूतनाभिश्चिकित्साभिरुन्मूलयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥१३॥

आर्यभट्टं वियन्मण्डले स्थापयद्
पोखरणभूमिगर्भेऽणुशक्तिं किरत्।
शान्तिकार्येष्वणुं प्रेरयत्सन्ततं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥१४॥

रोहिणीं प्रक्षिपद् भास्करं साधयद्
आत्मनीनैरमोघैर्मितैः साधनैः ।
युद्धपोतांश्च सिन्धूरसि स्थापयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥१५॥
रेलनौकाविमानैर्बसैर्मोटरैः
कारटैम्पूशकट्यादिभिर्यानकैः ।
यच्चरैवेति नित्यं समुद्घोषयद्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥१६॥
यद् बरौनी - भिलाई - बुकारोस्वनैः
स्वोन्नतिस्यन्दनोत्थं शुभं घर्घरम् ।
दिक्षु विस्तारयद् वीक्ष्यते सर्वदा
भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥१७॥

एतेनोच्चतरसुषमाविवरणेन भारतस्य नूतनजागर्तिचित्रमेव समुन्मिषितं जायते सचेतषां चेतसि।

यद्यपि काव्यस्यैतस्य चित्ते तादृशं विद्यतेऽनुरञ्जनं यत् पुनः पुनरास्वादनाय प्रेरयति, पुनः पुनरालोकितं सदेतत्काव्यं वारं वारं कामप्यभिनवामेव लेखनप्रेरणां प्रेषयति, भारतं प्रत्यतन्द्रितं प्रेम मानसे जागरयति, तथाऽपि पूर्णरूपेणैकदैवैतादृशस्य काव्योत्तमस्याकलनं मादृशस्य कृते नितान्तं कठिनतरम्। वीरतासंपूरित-श्रीरमाकान्तशुक्लमहोदयं परितः संस्कृतसहृदसयमाजस्याशा प्रसरति यदयं प्रारम्भ एव। आगामिनि काले लोकोत्तरयाऽनया प्रतिभया श्रीमानयं कविः काव्यसौगन्ध्यं नूनं विस्तारयत्विति जगदीश्वरसविधे भावप्रवणा प्रार्थना विद्यतेऽस्मादृशानाम्।

अथ कैश्चन पद्यैरालोच्यते 'भाति मे भारतम्' :—

श्रीरमाकान्तशुक्लस्य काव्यं नवं 'भाति मे भारतं' शुभ्रचित्राञ्चितम् ।
शब्दधाराप्रवाहेण रोमाञ्चितं भावनागुम्फितं सर्वमोदावहम् ॥१॥
शुभ्रव्यक्तित्वधाराऽभिरामं परं हृत्तरंगेषु दोलायमानं कथम् ।
सा प्रतीक्षाऽस्ति काचित् प्रपूर्णीकृता मेघदूतोत्तरं या विवृद्धिं गता ॥२॥
कुत्र सौख्यं समस्तं मिलेत्पूर्णतः ? कुत्र तृप्तिः समासादनीया भवेत् ?
प्रश्नजातस्य सर्वस्य तत्रोत्तरं "भाति मे भारतम्" "भाति मे भारतम्" ॥३॥
नैकगोष्ठीषु देशस्य सम्यक्श्रुतं सत्कवीनां समाजेषु यच्चर्चितम् ।
यत् श्रुतं श्रोतृवृन्दे परं तुष्टिदं तादृशं विद्यते "भाति मे भारतम्" ॥४॥
विश्वविद्वत्समाजस्य सम्मेलने काशिकायां रमाकान्तसंश्रावितम् ।
श्रोतृविद्वत्समूहे भृशं नन्दितं दिव्यमोदान्वितं "भाति मे भारतम्" ॥५॥
को नु ब्रूतेऽद्य यत् प्राक्तनं संस्कृतम् ? नो नवं संस्कृतं नो नवस्फूर्तिदम् ?
यो मृतं संस्कृतं वा समुद्घोषयेद् तन्मुखे मुद्रणं "भाति मे भारतम्" ॥६॥
या प्रवृत्तिर्नवा भारते दृश्यते तस्य सर्वस्य दृश्यावलिः प्रस्तुता ।
प्राक्तनं गौरवं सम्यगाम्रेडितं रम्यकाव्येऽत्र तद् "भाति मे भारतम्" ॥७॥
ये पठन्त्यद्य तेषां नवस्फूर्तिदं संस्कृतेऽपि प्रसादस्य[1] काष्ठा परा ।
सत्वरं यन्मनोबुद्धिसन्तर्पणं तादृशं सौख्यदं "भाति मे भारतम्" ॥८॥
सत्कवेरोजपूर्णैः स्वरैर्भूषितं श्रोतृवृन्देषु रोमाञ्चसञ्चारकम् ।
पाठकाले "पुनः"[2]शब्दसम्पूजितं तादृशं विद्यते "भाति मे भारतम्" ॥९॥
संस्कृतेऽद्यापि काव्यं नवं रच्यते ? यद्भवेत्सर्वसाधारणे विश्रुतम् ?
सर्वथानूतनैर्भावसार्थैर्युतं ? तत्र सिद्धोत्तरं "भाति मे भारतम्" ॥१०॥
राजधान्यामिहाऽविष्कृतंभूरिशो भाग्यमालाभिरास्ते परं मण्डितम् ।
सद्यशोवर्षकं सत्कवेर्नित्यशो भूरिभाषाञ्चितं "भाति मे भारतम्" ॥११॥

---

१. प्रसादगुणस्य

२. कविसम्मेलनेषु श्रोतृभिरेतत्पठनावसरे 'पुनः' 'पुनः' इति ध्वनिः क्रियते

मातृभूभक्तिसाम्राज्यसन्देशदं मातृभूभक्तवीरस्मृतिस्फूर्तिदम् ।
भावसौगन्ध्यसारेण सम्पूरितं दिव्यतामण्डितं "भाति मे भारतम्" ॥१२॥
नव्यसंयोजनावर्णनैर्मण्डितं शुभ्रविज्ञानधारासमासेवितम् ।
चिन्मयैकान्तमित्रत्वमासादयत् द्योतते मानसे "भाति मे भारतम्" ॥१३॥
',कान्त'वाङ्मञ्जरीसेवितं सर्वशो व्यञ्जनाभिर्नवाभिः समाराधितम् ।
चित्रसौगन्ध्यचुञ्चुद्विरेफैः परं विज्ञैरासादितं "भाति मे भारतम्" ॥१४॥
श्रीरमाकान्तशुक्लोऽभिनन्द्यो न कैर्येन नव्यं नवस्फूर्तिदं निर्मितम् ।
काव्यमारात् प्रभाभास्वरं सुस्वरं नित्यमानन्ददं 'भाति मे भारतम्" ॥१५॥

'भाति मे भारत'मितिकाव्ये राष्ट्रियभावना

(डा० हरिनारायणदीक्षितः, संस्कृतविभागाध्यक्षः,
कुमायूं विश्वविद्यालयः, नैनीताल: उ०प्र०)

'भाति मे भारतं' नामेदं काव्यं शतककाव्यं विद्यते। अस्मिन्नष्टोत्तरशतसंख्यकानि पद्यानि सन्ति। अतः इद मम मतेन मालाकाव्यमपि कथयितुं शक्यते; यतो मालायामपि अष्टोत्तरशतसंख्याका मणयो भवन्ति।

अस्य काव्यस्य रचयिता कविवरो डॉ० रमाकान्त शुक्लोऽस्ति, योऽद्यत्वे दिल्लीविश्वविद्यालयीये राजधानीकालेजे हिन्दीविभागे प्राध्यापकपदमलङ्कुर्वाणोऽस्ति। अस्य काव्यस्य प्रकाशनं 'देववाणी-परिषद्, ६ वाणीविहार, नयीदिल्ली-११००५९' तः प्रकाश्यमानायाम् 'अर्वाचीनसंस्कृतम्' इत्याख्यायां त्रैमासिक्यां पत्रिकायामीशवीये १९८० तमे वर्षे जातमासीत्। तदनन्तरमिदं काव्यं मनोऽभिरामाकारपृष्ठात्मकस्वतन्त्रपुस्तकरूपेणापि हिन्द्यङ्ग्रेज्यनुवादसहितं प्राकाश्यमायातमस्तीति हर्षविषयः।

अस्मिन् काव्ये कविवरः डा० शुक्लः स्वीयस्य भारतराष्ट्रस्य वैशिष्ट्यानां वर्णनं विधाय भारतीयेषु जनेषु आत्मनिष्ठां राष्ट्राभिमानभावान् प्रोद्दीपयितुम् अचेष्टत। देशवासिषु राष्ट्रप्रेम्णो राष्ट्रियभावनाया वा चेतनामुद्बोधयितुं तेन भारतीयायाः संस्कृतेः विविधेषु समाकर्षकेषु पक्षेषु प्रकाशः पातितोऽस्ति। तदीयं कथनमस्ति यद् भारतमेव एतादृशं राष्ट्रमस्ति यत्र हिंसायामहिंसाया विजयो भवति; आत्मा शरीरबन्धनान्मुक्तिं लभते (पद्यसंख्या, २); वेश-भूषा-

अशन-पान-धर्म-मनोरञ्जन-क्रीडा-रीति-प्रथादिषु वैविध्ये सत्यपि आन्तरिकी एकता विद्यते; वैदिकवाङ्मय-साहित्य-संगीतकलादीनामाराधना भवति; ज्ञानस्य सार्थकता तस्य क्रियात्मकतायामेव मन्यते (प०सं० ५-८); सगुणोपासनायां बलं दीयते (प०सं० २०-२२); प्राच्यविद्यायाः प्रशंसा बिधीयते (प० सं० २५-२७); सत्यं शिवं सुन्दरं च समाराध्यते; रामराज्यस्य परिकल्पना क्रियते (प० सं० ६८); रक्तपातं शस्त्रपातं च विनैव राष्ट्रे क्रान्तेः फलवत्यो लहर्य्यः समुत्थिता भवन्ति; हिंसका नराः निजैर्दुष्कृत्यैः स्वयमेव निस्सत्त्वा भूत्वा नश्यन्ति; साधुजनाश्च सर्वेषु साम्यभावं पश्यन्ति (प० सं० ७४-७५)।

स्वमातृभूमेः भारतभूमेः रमणीयतायाः प्रकाशनेऽपि कविनिष्ठो राष्ट्रप्रेमा राष्ट्राभिमानो वा एव प्रधानो हेतुरस्ति। कवेः कथनमस्ति यत्स्वीयस्यास्य भारतदेशस्य सर्वैरेव भूयसी प्रशंसा विहितास्ति; दानवा इमं बाधितुं नापारयन्; देवा अपि एतस्य आराधनां कुर्वन्ति; सज्जनानां विदुषाञ्च त्वेतत् साधनास्थलमेव विद्यते; मानव-दानव-सज्जन-दुर्जन-धनि-निर्धन-सबल-निर्बलादिभ्यः सर्वेभ्य एव एतत् रोचते (प० सं० ३-४); अनेकैः पावनैस्तीर्थैः, व्रतैरुपवासादिभिश्च इदं राष्ट्रं सदा संशोभितं बोभूयते; चतुर्णामपि धाम्नां सत्तां संरक्षति; पुष्कर-अमृतसरस्-प्रयागादिभिश्च अन्यैरप्यनेकैः दर्शनीयैः स्थलैर्युक्तमस्ति (प० सं० २८-३०); विज्ञानस्य प्रगतौ प्रवीणमस्ति (प० सं० ६३); विश्वे विख्यातमस्ति (प० सं० ६५); परमप्रियमस्ति (प० सं० ६६); स्वाभिमानेन च संयुक्तमस्ति (प० सं० १०६)।

कविना राष्ट्रस्य प्रगतौ प्रसन्नता प्रकटितास्ति । कृषिक्षेत्राणां सेकार्थं विद्युदुत्पादनार्थं च भाखड़ा-दामोदरघाटी-बाणगङ्गा-फरक्कादिषु स्थानेषु जलबन्धानां फलवतीषु योजनासु तेनाखर्वो गर्वोऽनुभूयते । स्वकीये देशे सम्पद्यमानानां तैलशोधन-इन्धनान्वेषण-इस्पातनिर्माण-कलनिर्माण-औषधालयस्थापना-औषधिनिर्माण--शल्यचिकित्साभिनवानुसन्धान--आर्यभट्टरोहिणीभास्कराद्युपग्रहसर्जना-वसुधान्तर्गताणुविस्फोट-युद्धपोतविमानरेलयानबसादिनिर्माणादीनामनेकेषां राष्ट्रियकार्यकलापानां कविना मुक्तकण्ठेन प्रशंसा विहितास्ति (प० सं० ११-१७); स्वराष्ट्रे प्रवहन्तीनां गङ्गा-यमुना-चन्द्रभागा (चिनाब) विपाशा (व्यास)-नर्मदा-तुङ्गभद्रा-ब्रह्मपुत्र-मन्दाकिनी-गोदावरीप्रभृतीनां नदीनामाधिकस्य च महिम्न: प्रभावोत्पादक: समुल्लेखो विहितोऽस्ति (प० सं० ६, ११, ३५); हिमालय-विन्ध्याचल-सह्याचल-नीलाचलादीन् गिरीन् प्रति स्वाभिमानात्मिका आत्मीयता प्रकटितास्ति; प्राकृतिकच्छटाया वर्णनं कृतमस्ति (प० सं० १०, ४०-४४); कश्मीरात्प्रभृति कन्याकुमारीपर्यन्तं सर्वेषामेव भारतीयप्रदेशानां गौरवाधायकं संस्मरणं विहितमस्ति; जगद्गुरुशङ्कराचार्य-क्षत्रपतिशिवाजि-स्वामिदयानन्द-स्वामिविवेकानन्द-गुरुनानक--पण्डितमहामनोमदनमोहनमालवीय-श्रीगोपालकृष्णगोखले-प० बालगङ्गाधरतिलक-महात्मगान्धि-पं० जवाहरलालनेहरूप्रभृतीन् देशभक्तान् प्रति गौरवात्मक: समादर: प्रकटितोऽस्ति (प० सं० ४७-५५); वेदव्यास-आदिकविवाल्मीकि-भास-कालिदासादीनां राष्ट्रगायकानां कवीनाम् आत्मगौरवपुरस्सरं समुल्लेखो विहितोऽस्ति; वेद-महा-

भारत-गीता--रामायण-योगवासिष्ठ--रामचरितमानसादीनां भारतराष्ट्रस्य सांस्कृतिकग्रन्थरत्नानां चर्चा कृतास्ति (प०सं० २४-२७); अखिलभारतीयेषु च तीर्थेषु पर्वसु च उल्लासपुरस्सरं प्रकाशः पातितोऽस्ति (प० सं २८, ३२, ३६-३७)।

स्वदेशस्य राष्ट्रियाणि पर्वाणिप्रति तु कविना भूयानुत्साहः प्रदर्शितोऽस्ति। भारतीयगणतन्त्रदिवसोत्सवमुपलक्ष्यीकृत्य आत्मनिष्ठमुल्लासमभिव्यञ्जता तेन लिखितमस्ति—

जन्वरीमासषड्विंशके वासरे
इण्डियागेटपार्श्वस्थितो दर्शकः।
यस्य शोभाप्रवाहे मुदा मज्जति
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥
यस्य दिल्लीस्थिते रक्तदुर्गे शुभे
संसदश्चोत्तमाङ्गे त्रिरङ्गध्वजः।
सार्वभौमीं स्वत्तां वदत्युल्लसन्
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥
(पद्यसंख्या, ५९-६०)

मातृभूमिं भारतभूमिं वैदेशिकशासनपाशात् मोचकान् देशभक्तान् प्रति यदीये हृदये अपारः समादरो वर्त्तते। तस्य सन्देशोऽस्ति यद् राष्ट्ररक्षाहेतवे समरभूमौ शौर्यप्रदर्शका वीराः कदाचिदपि नैव विस्मृतिं नेयाः। स तान् प्रति कृतज्ञतामभिव्यनक्ति। स गर्वमनुभवति यत्तदीये भारते राष्ट्रे एतादृशा अपि राष्ट्रभक्ता वीरा वरीवृत्यन्ते, ये युद्धयज्ञे प्राणैरपि आहुतिं दत्वा राष्ट्रस्य सम्मानं रक्षन्ति (प० सं० ७०-७६)।

कविना भारतीयानां जनानां स्वाभिमानोऽपि प्रशंसाबद्धिर्वचनैः प्रकटितोऽस्ति (प० सं० ८५)। अत्र समागत्य

निवसतो विविधर्मावलम्बिनो जनान् आत्मसात्कर्त्तुं भारत-देशस्य राष्ट्रियां क्षमतामपि स महता गौरवेण लिखित-वानस्ति (प० सं० ४६)।

कवेः कथनमस्ति यदनेके देशद्रुह-वञ्चकतस्करादयः आस्माकीनं भारतवर्षं समाप्तं कर्त्तुमिच्छन्; किन्तु कर्त्तुं नापारयन्। यतो हि अस्मदीयो देशः अजरोऽस्ति, अमरोऽस्ति, शाश्वतोऽस्ति, आशावादी चास्ति। अस्माकं सर्वेषामेव इदं परमं कर्त्तव्यमस्ति यद् उत्तिष्ठन्तस्तिष्ठन्तः, चलन्तो भ्रमन्तः, क्रीडन्तः कूर्दन्तः, खादन्तः पिबन्तः सततमेव स्वदेशस्य अभ्युदयहेतवे कामनां कुर्याम (प० सं० १०२-१०४)। कश्चित्कियतीमपि निन्दां कुर्यात्, किन्तु अस्माभिः सर्वदैव स्वदेशस्य वन्दना विधेयाः; तस्य कीर्त्तिर्गेया; तस्य सर्वविधरम्याहेतवे आकाङ्क्षाः विधेयाः; तथा आस्माकीने राष्ट्रे कस्यापि शोषणं न स्यात्; कश्चिद् विपन्नो न स्यात्; कश्चिद् दीन-हीनो न स्यात्; तथा सर्वे प्रसन्नमनसो भवेयुरित्येतदर्थं संकल्पो ग्रहीतव्यः (प० सं० १०७-१०८)।

दृढतापूर्वकं प्ररोचनात्मिकया च रीत्या स्वकीय-राष्ट्रियभावनाया अभिव्यक्तिकरणेन सहैव कविना स्वराष्ट्रस्य विश्वमङ्गलकामनापि प्रकटय्य आत्मनिष्ठा अन्ताराष्ट्रिय-भावनापि प्राकाश्यमानीतास्ति। तस्य कथनमस्ति यद् भारतराष्ट्रं विश्वस्य सर्वैरेव राष्ट्रैः सार्धं बन्धुतायाः भावनां रक्षति; समस्तं संसारम् एकं परिवारमिव मन्यते (प० सं० १); स्वीयैराध्यात्मिकैः सन्देशैः सकलं जगत् सुखितं चिकीर्षति; सर्वेषां दुःखं सुखरूपेण परिणतं चिकीर्षति (प० सं० ८८); सर्वेभ्यश्च राष्ट्रेभ्यो निजं सुखदं

स्नेहं प्रदित्सति (प० सं० ६६)।

येन प्रकारेण कश्चिन्महात्मा अष्टोत्तरशतसंख्यकमणियुतया जपमालया स्वीयाराध्यदेवस्य मन्त्रं जप्त्वा तं प्रसादयितुं समीहते, अहं मन्ये, तेनैव प्रकारेण कविवर डॉ० शुक्लोऽपि अष्टोत्तरशतसंख्यकानि पद्यानि सर्जनापूर्वकं गीत्वा स्वीयं राष्ट्रदेवं प्रीणयितुं कामयते। भारतराष्ट्रस्य यशोगानपुरस्सरमेषा वन्दना भारतीयेषु जनेषु आत्मगौरवात्मिकां राष्ट्रियभावनावश्यमेव प्रोद्दीपयिष्यतीत्यत्र नास्ति कश्चिदपि शङ्कापङ्ककलङ्कलेशावसरः।



भाति मे भारतम्

में राष्ट्रिय भावना

लेखकः

डा० हरिनारायण दीक्षित

एम० ए०, पीएच० डी०, डी०लिट्० साहित्य-सांख्ययोग-व्याकरणाचार्य

अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग

कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल-२६३००२ (उ०प्र०)

यह शतककाव्य है। इसमें १०८ पद्य हैं; अतः इसे मालाकाव्य भी कह सकते हैं; क्योंकि माला में भी १०८ 'दाने' होते हैं। इस काव्य के रचयिता कविवर डॉ० रमाकान्तशुक्ल हैं, जो इन दिनों राजधानी कालेज, देहली के हिन्दी-विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापक पद को अलङ्कृत कर रहे हैं। आपने इस काव्य की रचना सन् १९७९ में की थी और 'देववाणी-परिषद्' वाणी विहार, नयी दिल्ली-५९ से सन् १९८० में इसे स्वयं ही स्वसम्पादित 'अर्वाचीनसंस्कृतम्' नामक त्रैमासिक में द्वितीय वर्ष के चतुर्थ अंक के रूप में 'भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्' शीर्षक से हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रकाशित भी किया है। १९८० में ही पृथक् पुस्तकाकार में 'भाति मे भारतम्' शीर्षक से देववाणी-परिषद् दिल्ली से इसका पुनः प्रकाशन हुआ।

कवि ने अपने भारतराष्ट्र की विशेषताओं का वर्णन करके भारतीयों में आत्मनिष्ठ राष्ट्राभिमान के भावों का प्रोद्दीप्त करना चाहा है। देशवासियों में राष्ट्रप्रेम किंवा राष्ट्रियभावना की चेतना को जगाने के लिए उसने भारतीय संस्कृति के आकर्षक पक्षों पर प्रकाश डाला है। उसका कहना है कि भारतवर्ष ही ऐसा राष्ट्र है जहाँ हिंसा पर अहिंसा की जीत होती है, आत्मा को शरीरबन्धन से मुक्ति मिलती है (पद्य संख्या २); वेश-भूषा, खान-पान, धर्म, खेल-कूद, रीति-रिवाज आदि में विविधता होने के बावजूद भी आन्तरिक एकता रहती है; वैदिक वाङ्मय, साहित्य, संगीत, कला आदि की आराधना होती है; ज्ञान की सार्थकता उसकी क्रियात्मकता में ही मानी जाती है (प० सं० ५-८); सगुण उपासना पर बल दिया जाता है (प० सं० २०-२२); प्राच्यविद्या की प्रशंसा होती है (प० सं० २५-२७); 'सत्यं शिवं और सुन्दरम्' की आराधना होती है; रामराज्य की परिकल्पना की जाती है (प० सं० ६८); रक्तपात तथा शस्त्रपात के बिना ही राष्ट्र में क्रान्ति की सफल लहरें उठा करती हैं; हिंसक प्राणी अपने दुष्कृत्यों से स्वयं ही मजबूर होकर नष्ट हो जाता है; तथा साधु पुरुष सबके समानभाव रखते हैं (प० सं० ७४-७५)।

भारतभूमि, जो अपनी मातृभूमि है, की रमणीयता को उजागर करने में भी कविनिष्ठ राष्ट्रप्रेम किंवा राष्ट्राभिमान ही प्रमुख प्रेरक है। कवि का कथन है कि अपने इस भारतदेश की सभी मनुष्यों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है; दानवों की दाल यहाँ नहीं गल पाई है; देवता भी इसकी आराधना करते हैं; सज्जनों और विद्वानों की तो यह साधनस्थली ही है; मानव-दानव, सज्जन-दुर्जन, धनी-निर्धन, सबल-निर्बल आदि सभी प्रकार के लोग इसे पसन्द करते हैं (प० सं० ४); अनेक पावन तीर्थों, व्रतों तथा उपवासादि से यह राष्ट्र संशोभित होता रहता है; चारों धामों की सत्ता को सुरक्षित रखता है; अन्य भी पुष्कर, अमृतसर, प्रयाग आदि अनेक दर्शनीय स्थलों से युक्त है (प० सं० २८-३०); विज्ञान की प्रगति में प्रवीण है (प० सं० ६३); विश्व में विख्यात है (प० सं० ६५) परमप्रिय है; सत्प्रेरणादायक है; वन्दनीय है (प० सं० ६६); तथा स्वाभिमान से युक्त है (प० सं० १०६)।

कवि ने राष्ट्र की प्रगति पर प्रसन्नता प्रकट की है। खेतों की सिंचाई तथा बिजली के उत्पादन हेतु भाखड़ा, दामोदरघाटी, बाणगङ्गा, फरक्का आदि स्थानों पर जलबन्धों की सफल योजनाओं पर उसे गर्व है। अपने देश में सम्पन्न होने वाले तैल-शोधन, इन्धनान्वेषण, इस्पातनिर्माण, कल-निर्माण, औषधालयों की स्थापना, औषधियों के निर्माण, शल्यचिकित्सा में अभिनव अनुसन्धानों, आर्यभट-रोहिणी और भास्कर नामक उपग्रहों की सर्जना, वसुधान्तर्गत अणुविस्फोट, युद्धपोतों-विमानों-रेलयानों-बसों आदि के निर्माण आदि अनेक राष्ट्रिय कार्यकलापों की उसने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है (प० सं० ११-१७); अपने राष्ट्र में प्रवाहित होने वाली गंगा, यमुना, चन्द्रभागा (चिनाब), विपाशा (व्यास), नर्मदा, तुंगभद्रा, ब्रह्मपुत्र, मन्दाकिनी, गोदावरी आदि नदियों की आर्थिक तथा धार्मिक महिमा का प्रभावोत्पादक उल्लेख किया है (प० सं० ९, ११, ३५); हिमालय, विन्ध्याचल, सह्याचल, नीलाचल आदि पर्वतों के प्रति स्वाभिमानात्मक आत्मीयता प्रकट की है; प्राकृतिक छटा का वर्णन किया है (प० सं० १०, ४०-४४); कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी भारतीय प्रदेशों का गौरवाधायक संस्मरण किया है; जगद्गुरु शंकराचार्य, क्षत्रपति शिवाजी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक, पं० महामना मदन मोहन मालवीय, श्री गोपालकृष्ण गोखले, पं० बालगंगाधर तिलक, महात्मा गान्धी, पं० जवाहरलाल नेहरू

आदि देशभक्तों के प्रति गौरवात्मक आदर प्रकट किया है (प० सं० ४७-५५); वेदव्यास, आदिकवि वाल्मीकि, भास, कालिदास आदि राष्ट्रगायक कवियों का आत्मगौरवपूर्वक उल्लेख किया है; वेद, महाभारत, गीता, रामायण, योगवासिष्ठ, रामचरितमानस आदि भारतराष्ट्र के सांस्कृतिक ग्रन्थरत्नों की चर्चा की है (प० सं० २४-२७); तथा अखिलभारतीय तीर्थों एवं त्योहारों पर प्रकाश डाला है (प० सं० २८-३२, ३६-३७)।

अपने देश के राष्ट्रिय पर्वों के प्रति कवि ने अत्यधिक उत्साह दिखाया है। भारतीय गणतन्त्र दिवस (छब्बीस जनवरी) के उत्सव पर आत्मनिष्ठ उल्लास को अभिव्यक्त करते हुए उसने लिखा है—

जनवरीमासषड्विंशके वासरे इण्डियागेटपार्श्वस्थितो दर्शकः।
यस्य शोभाप्रवाहे मुदा मज्जति भूतले भाति तन्ममाकं भारतम् ॥
यस्य दिल्लीस्थिते रक्तदुर्गे शुभे संसदश्चोत्तमांगे त्रिरंगध्वजः।
सार्वभौमीं स्वसत्तां वदत्युल्लसन् भूतले भाति तन्मामकं भारतम् ॥

(पद्य संख्या, ५९-६०)

मातृभूमि भारतभूमि को विदेशियों के शासन-पाश से मुक्त कराने वाले देशभक्तों के प्रति उसके हृदय में अपार आदर है। राष्ट्र की रक्षाहेतु युद्धभूमि में शौर्य प्रदर्शित करने वालों को वह कभी भी न भूलने का सन्देश देता है। वह उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। उसे गर्व है कि उसके देश में ऐसे भी राष्ट्रभक्त वीर हैं जो अपने प्राणों की भी आहुति देकर राष्ट्र के सम्मान की रक्षा करते हैं (प० सं० ७०-७६)।

कवि ने भारतीयों के स्वाभिमान को भी प्रशंसापरक शब्दों में प्रकट किया है (प० सं० ८५)। यहाँ आकर बसने वाले विविध धर्मावलम्बियों को आत्मसात् करने की अपनी राष्ट्रिय क्षमता को भी उसने बड़े ही गौरव के साथ लिखा है (प० सं० ४६)।

कवि का कहना है अनेक वंचकों, तस्करों, देशद्रोहियों आदि ने हमारे भारतवर्ष को समाप्त करना चाहा है; किन्तु कर नहीं सके हैं। क्योंकि हमारा देश अजर है; अमर है; शाश्वत है; और आशावादी है। हम सबको चाहिए कि उठते-बैठते, चलते-फिरते, खेलते-कूदते, सदैव अपने देश के अभ्युदयहेतु कामना करें (प० सं० १०२-१०४)। कोई कितने ही दोष गिनाए, पर हमें हमेशा ही अपने देश की वन्दना करनी चाहिए; उसकी कीर्त्ति गानी चाहिए; और उसकी सर्वविध रम्यताहेतु आकांक्षाएँ करनी

चाहिए ; तथा हमारे राष्ट्र में किसी का शोषण नहीं हो; कोई विपन्न नहीं नहीं हो; कोई दीन-हीन नहीं हो; तथा सभी प्रसन्न रहें; इसके लिए संकल्प लेना चाहिए (प०सं० १०७-१०८)।

अपनी राष्ट्रिय भावना को दृढ़तापूर्वक प्ररोचनात्मक रीति से अभिव्यक्त करने के साथ ही साथ कवि ने अपने राष्ट्र की विश्वमंगलकामना को भी प्रकट करके आत्मनिष्ठ अन्ताराष्ट्रिय भावना को भी उजागर किया है। उसका कथन है कि भारतराष्ट्र विश्व के सभी राष्ट्रों के साथ बन्धुत्व की भावना रखता है; समस्त संसार को एक परिवार मानता है (प०सं० १); अपने आध्यात्मिक सन्देशों से सम्पूर्ण जगत् को सुखी बनाना चाहता है; सब के दुःख को सुख में परिणत करना चाहता है (प०सं० ८८); और सभी को अपना सुखद स्नेह प्रदान करना चाहता है (प०सं० ९६)।

जिस प्रकार कोई महात्मा एक सौ आठ दानों वाली माला से अपने किसी आराध्यदेव के मन्त्र का जप करके उसे प्रसन्न करना चाहता है, शायद उसी प्रकार कविवर डॉ० शुक्ल भी एक सौ आठ पद्यों को सर्जनापूर्वक गाकर अपने राष्ट्रदेव को प्रसन्न करना चाहते हैं। भारतराष्ट्र की यशोगानपूर्वक यह वन्दना भारतीयों में आत्मगौरवपरक राष्ट्रियभावना को अवश्य ही उद्दीप्त करेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

●

A work in 108 stanzas, *Bhāti me bhāratam* has its title picked up from the refrains *bhūtale bhāti me 'nāratam bhāratam* and *bhūtale bhāti tan māmakam bhāratam*, that run, sometimes the one and sometimes the other, through the entire work which is marked by intense devotion on the part of its author to his mother land whose glory, past and present, he brings out in the rhythmic Sragviṇi metre, employed throughout. As in a kaleidoscope he goes on portraying in mellifluous words his country's religious personalities, its great men, its rivers, its dams and plants and its patriots who laid down their lives to restore independence to it and the brave soldiers who perished in wars with China and Pakistan. The work carries Hindi and English translations by the author himself.

(Prof. Satya Vrat SHASTRI, Head of the Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi 110007)

भाति मे भारतम्

(समीक्षा)

(डॉ० भागीरथप्रसादत्रिपाठी, 'वागीशः शास्त्री'

अनुसन्धान संस्थान निदेशक, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

अथर्ववेदसंहितायां 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इत्येतादृशं वचनं राष्ट्रसंस्तवनात्मकमधिगम्यते। यद्यपि पुराणेषु महाकाव्येषु च तदानीन्तना मुनयो महाकवयश्च राष्ट्रसपर्यापूरितैर्भूयोभिर्विकीर्णैर्वचोभी राष्ट्रदेवताः समाजयामासुः, तथापि किमप्येकं तादृशं पुस्तकमितः पूर्वं न विरचितं दृश्यते, यत्र राष्ट्रदेवताया अविकलं स्वरूपं चित्रितमिवाविर्भूतं स्यात्। आध्यात्मिके क्षेत्रे चिरन्तनी विष्णुशिवगणेशदुर्गादिस्तोत्ररचनापरम्परा दृश्यते, न तु राष्ट्रदेवतास्तोत्ररचनापरम्परा। डॉ० रमाकान्तशुक्लविरचितं 'भाति मे भारतम्' इति काव्यमुक्तं द्विविधं न्यूनत्वं न्यूनयतीति विभाव्य प्रसीदति निर्भरं नश्चेतः। 'अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं भजे' इति शङ्कराचार्यप्रणीताच्युताष्टकस्तोत्राल्लब्धप्रेरणो डॉ० शुक्लः काव्यकलेवरगतिं स्रग्विणीं निरदीधरत्। तादृशीमितीदमीया लयताऽऽद्यविकला गेयता संसिध्यति राष्ट्रस्यैक्यसम्पादकेषु कार्यक्रमेष्वयमन्यतमः प्रयासो भृशं श्लाघनीयः। भारतवर्षे 'हिन्दुस्तानी बिरादरी' इत्याख्यः कश्चिद् दिवस आयोज्यते। भारतवर्षस्य साङ्गोपाङ्गं यादृशं समग्रं स्वरूपमिह प्रणेत्रा युगानुरूपं निरूपितं तादृशमन्यत्र खलु मन्ये सुदुर्लभम्।

'अविभक्तं विभक्तेषु विभक्तमिव च स्थितम्' इति गीतोक्तिमनुमोदते श्रीशुक्लग्रन्थोक्तिरियम्—

वेषभूषाशनोपासनापद्धति-
क्रीडनामोदसंस्कारवृत्त्यादिषु।
यद्धि भिन्नं सदप्यस्त्यभिन्नं सदा,
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥ इति।

वेद-दर्शन-साहित्य-संगीत-कलानाम्, नदीनाम्, रुद्धतत्प्रवाहरूपाणामाधुनिकानां बन्धानाम्, विद्युदुत्पादनागाराणाम्, तैलसंशोधनागाराणाम्, इन्धनान्वेषणानाम्, लौहनिष्पादनानाम्, यन्त्रनिर्माणकार्याणाम्, चिकित्सालयानाम्, औषधनिर्माणशालानां च जीवदिव प्रत्यग्रं चित्रं चित्रितमिह पुस्तके भारतभुवः। वियन्मण्डले यन्त्रप्रक्षेपणादिरूपायाः, भूगर्भेण शक्तिपरीक्षणरूपायाः, समुद्रवक्षःस्थले युद्धपोतनर्तनरूपायाः, भूदोरसि रेल-बस-मोटर-कार-टेम्पू-नौकायानरूपायाः, बरोनी-भिलाई-बुकारो-प्रभृतिषु स्थानेषूत्पादनपरायणयन्त्ररूपाया भारतसमुन्नतेः सरलया गिरा कृतं यथायथं चित्रणमस्य ग्रन्थस्य वैशिष्ट्यम्।

इह धर्मार्थकाममोक्षभक्तिकर्मज्ञानरूपाणां परमात्मप्राप्त्युपायानाम्, संस्कृतप्राकृततामिलतेलुगुकन्नडमलयालमबांग्ला-आंग्लादिभाषाणां व्यवह्रियमाणानाम्, ग्रन्थकाराणां वाल्मीकिव्यासकालिदासादीनाम्, ग्रन्थरत्नानां विविधरामायणानाम्, योगवासिष्ठमहाभारत (श्रीमद्भगवद्गीता)-मानस-सूरसागरप्रभृतीनाम्, मेलकानाम्, नाटकरामलीलारासादीनाम्, अजन्ता-एलोरा-हस्तिगुम्फा-खर्जूरवाह-बोधगया-सारनाथ-ताजमहल-कोणार्क-विष्णुध्वजादीनां पुरातत्त्वानाम्, होलिका-दशहरा-कोजागरी-पोंगल-श्रावणी-दीपमाला-लोहड़ी-दीपमालोत्सवानाम्, ओडिसी-मणिपुरी-भरतनाट्य-

कुचिपुडि-कत्थक-डाण्डियारासक-कथकली-गर्वा-माङ्गड़ाप्रभृतीनां नृत्यविशेषाणाम्, मन्दिर-मस्जिद-चैत्य-गिर्जाघर-आर्यमन्दिर-गुरुद्वारादीनामुपासनास्थलानाम्, पुण्यसलिलानां नदीनाम्, पुण्यधाम्नां वृन्दावन-वाराणसीत्यादीनाम्, हंस-कारण्डव-सारस-वर्तक-क्रौंच-काक-पिक-खञ्जरीट-शुक-तित्तिरि-टिट्टिम-श्येन-गृद्ध्राणां पक्षिविशेषाणाम्, पण्डित-योद्धृ-वणिक्-कार्मिक-वानप्रस्थ-संन्यासिप्रभृतीनां जीवनप्रकाराणाम्, आर्यानार्य-हूण-तुरुष्क-शक-बर्बर-म्लेच्छादीनां जातिविशेषाणां भारते समवेतानाम्, प्रदेशविशेषेषु जायमानानां धनधान्यविशेषाणाम्, शिवाजी-नानक-तुकाराम-विवेकानन्दाऽरविन्द-दयानन्द-गोखले-बालगङ्गाधर-गान्धि-मालवीय-नेहरूप्रभृतीनां राष्ट्रपुरुषाणाम्, महाराष्ट्र-पंजाब-कर्नाटक-तामिल-मध्यप्रदेश-(मालव)-राजस्थान-आन्ध्र-नागा-अरुणाचलादिप्रदेशानां स्वस्ववैशिष्ट्य-मण्डितानाम्, कुरुक्षेत्रादीनां तीर्थस्थानानाम्, 'षड्विंशजनवरी-इण्डियागेट-रक्तदुर्ग-(लालकिला)-त्रिरङ्गध्वजादीनां च भारतदेशस्याङ्गभूतानां प्राचीनताऽर्वाचीनतासमन्वयपरं निर्वर्णनमिदं राष्ट्र-देवतासमाराधकस्य कस्य मनोमोदाय न सम्पत्स्यते।

मारतस्य प्रकाशपक्षवर्णनेन सहैवान्धकारपक्षोऽपि वर्णितः कविना। वर्णनमिदमन्तरा भारतदेवतायाः समग्रं चित्रणं न सम्भाव्यते। एतद् वर्णनं (७९-८७ श्लोकेषु) नवसंख्याकैः श्लोकैर्विहितमतीव हृद्यं कवितासाफल्यमभिव्यनक्ति। तस्य चरमः श्लोकोऽयमास्वाद्यतां कवितासुधास्वादनप्रियैर्भावुकैः—

यत्र नास्त्यङ्कुशो वाचि कस्यापि वै,
यत्र नास्त्यङ्कुशो मानसे कस्यचित्।
यत्र नास्त्यङ्कुशः कर्मणि क्वापि वै,
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥ इति।

पर्यन्ते कविर्जगतः सौख्यपूर्णतां सम्भावयति—

दुःखपूर्णं जगत् सौख्यपूर्णं भवेत्,
यस्य रम्योपदेशैः सुधापूरितैः।
जङ्गले मङ्गलं यच्च कर्तुं क्षमं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्॥
शोषितो नात्र कश्चिद् भवेत् केनचित्,
व्याधिना पीडितो नो भवेत् कश्चन।
नात्र कोऽपि व्रजेद् दीनतां हीनतां
मोदतां मे सदा पावनं भारतम्॥ इति।

एवं तावदिदमेकं काव्यं संग्रहेण भारतभूभागस्याविकलां छविमुपस्थापयितुं प्रभवति। राष्ट्रसंस्कृतिपरिचयाय, राष्ट्रभक्तिसंवर्धनाय लघुकाव्यस्याष्टोत्तरशतकस्यास्य प्रतिविद्यालयं गानाय जागरूकेण शासकेन नियमनीयमेत। प्रतिपृष्ठं भारतदेवताया ब्लाकचित्रे काव्यस्य मुद्रणमाकर्षकम्। यद्यपि श्लोकभाषा स्वल्पसंस्कृतज्ञानामपि हृदयङ्गमा भवति, तथाप्यन्येषामपि भावबोधाय कविना सायासं हिन्द्याङ्गलभाषानुवादः समुपन्यस्तः। वस्त्रनिबन्धनपरिमण्डितं 'भाति मे भारतम्' हृदयमाह्लादयति सहृदयानाम्। प्रणेता स्वकर्मणि फलाशानासक्तः साफल्यमध्यगमदिति ध्रुवं शक्नोमि व्याहर्तुम्।



काव्यप्रणेता रमाकान्तशुक्लः

जन्मतिथिः २४-१२-१९४० ई०

जन्मस्थानम् खुर्जा (उ०प्र०)

शिक्षास्थले खुर्जास्थश्रीराधाकृष्ण-संस्कृतकालेजः, एन. आर. ई. सी. कालेजश्च ।

शिक्षा एम. ए. (हिन्दी-संस्कृतयोः) पीएच० डी० (आगराविoविo), साहित्याचार्यः (वाराणसेयसंस्कृतवि०वि०)।

प्रकाशिता ग्रन्थाः जैनाचार्य रविषेण-कृत पद्मपुराण और तुलसीकृत रामचरितमानस (उ.प्र. शासनपुरस्कृतः), उत्तररामचरितप्रियम्वदाव्याख्या (सहलेखनम्), अर्वाचीनसंस्कृतमहाकाव्य-विमर्शः (खण्डत्रयम्), पुरश्चरणकमलम् (नाटकम्), अर्वाचीनसंस्कृत-साहित्य-परिचयः (खण्डद्वयम्), पण्डितराजीयम् (नाटकम्), अभिशापम् (नाटकम्)

अप्रकाशिता रचनाः अमरदाराशिकोहम्, चक्रव्यूहभङ्गम्, नियतिचक्रम्, मज़बूत धागे (आकाशवाणीदिल्लीतः प्रसारितानि रेडियोनाटकानि), अन्याश्च स्फुटकविताः ।

साम्प्रतिकवृत्तिः दिल्लीविश्वविद्यालयस्याङ्गभूते राजधानीकालेजे हिन्दीविभागे वरिष्ठप्राध्यापकः ।

आवासः ६, वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५९